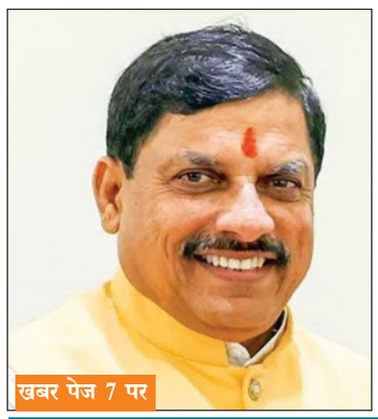

खबर पेज 7 पर

गंभीर समाचार

समय–समाज–संस्कृति

खबर पेज 8 पर

वर्ष -11 | अंक–14 | पाक्षिक समाचार पत्रिका | कोलकाता, बुधवार 1 – 15 अक्टूबर 2025 | मूल्यः 5 रुपये | RNI No.WBHIN/2014/59321, ISSN No. 2456/3005 Kolkata | कुल पृष्ठ – 8

सुविचार

♦लहरें और समय किसी के लिए भी रुकते नहीं हैं।

♦इंसान सफल तब होता है जब वो जरूरत और चाहत के बीच फर्क समझ लेता है।

♦अगर ज़िन्दगी में कामयाब होना चाहते हो तो बोलने से ज़्यादा सुनने की आदत डालो!!

♦अगर आप किसी की सफ़लता से खुश नहीं होते तो, आप कभी सफ़ल नही हो सकते।

♦किसी को मनाने से पहले यह ज़रूर जान ले कि वो तुमसे नाराज़ है कि परेशान।

शेरो-शायरी

देखा है ज़िंदगी को कुछ इतने क़रीब से, चेहरे तमाम लगने लगे हैं अजीब से।

मैं ज़िंदगी का साथ निभाता चला गया, हर फ़िक्र को धुएँ में उड़ाता चला गया।

गर ज़िंदगी में मिल गए फिर इत्तिफ़ाक़ से, पूछेंगे अपना हाल तिरी बेबसी से हम।

मैं अकेला ही चला था जानिब-ए-मंज़िल मगर लोग साथ आते गए और कारवाँ बनता गया।

बिहार चुनाव से पहले लालू परिवार को बड़ा झटका

आईआरसीटीसी भ्रष्टाचार केस में कोर्ट ने तय किए आरोप

व्हील चेयर पर कोर्ट पहुंचे थे लालू यादव

निज संवाददाता : बिहार में विधानसभा चुनाव की तैयारियों के बीच आईआरसीटीसी घोटाला मामले में लालू फैमिली की मुश्किलें बढ़ गई हैं। दिल्ली की राऊज एवेन्यू कोर्ट ने आरजेडी सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव और बिहार में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव समेत सभी आरोपियों के खिलाफ आरोप तय कर दिए हैं यानी अब इन लोगों के खिलाफ इस केस में मुकदमा चलेगा।राउज एवेन्यू कोर्ट ने राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) के अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव, उनकी पत्नी राबड़ी देवी और बेटे तेजस्वी यादव के खिलाफ भारतीय रेलवे खानपान और पर्यटन निगम (आईआरसीटीसी) घोटाले से संबंधित एक मामले में भ्रष्टाचार, आपराधिक साजिश और धोखाधड़ी के आरोप तय किए हैं।विशेष न्यायाधीश (पीसी एक्ट) विशाल गोगने ने इस मामले में सोमवार को यह आदेश पारित किया। केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने आरोप लगाया है कि लालू यादव, जो 2004 से 2009 तक रेल मंत्री रहे, ने अपनी स्थिति का दुरुपयोग करते हुए निजी कंपनी सुजाता होटल्स को रांची और पुरी में दो आईआरसीटीसी होटलों के पट्टे के लिए अनुचित तरीके से ठेके दिए।इतना ही नहीं इसके बदले में, उनकी पत्नी राबड़ी देवी और बेटे तेजस्वी यादव से जुड़ी एक कंपनी को बाजार मूल्य से काफी कम कीमत पर करोड़ों की जमीन हस्तांतरित की गई। कोर्ट ने लालू यादव के खिलाफ भ्रष्टाचार और आपराधिक साजिश के आरोप तय किए, जबकि राबड़ी देवी और तेजस्वी यादव पर भी साजिश और धोखाधड़ी के कई अपराधों के आरोप लगाए गए हैं। लालू प्रसाद यादव, राबड़ी यादव और तेजस्वी यादव तीनों ने आरोपों को स्वीकार करने से इनकार किया है। उन्होंने कहा कि वो ट्रायल का सामना करेंगे। लालू फैमिली के खिलाफ जिन धाराओं के तहत आरोप तय किए गए हैं, उनमें आईपीसी 420, आईपीसी 120बी, प्रीवेंशन ऑफ करप्शन एक्ट की धारा 13(2) और 13 (1)(डी) शामिल हैं। बता दें कि प्रीवेंशन ऑफ करप्शन एक्ट की धारा 13(2) और 13 (1)(डी) सिर्फ लालू यादव पर लगी है क्योंकि उन्होंने सरकारी पद पर रहते हुए अपने पद का दुरुपयोग किया है।कोर्ट ने लालू यादव से पूछा क्या आप अपना अपराध मानते हैं तो लालू यादव समेत राबड़ी और तेजस्वी ने अपना अपराध मनाने से इनकार कर दिया। लालू फैमिली ने अदालत में कहा कि वह मुकदमे का सामना करेंगे। वहीं राबड़ी यादव ने कहा कि ये गलत केस है। कोर्ट ने माना कि लालू यादव की जानकारी में इस घोटाले की साजिश रची गई। कोर्ट ने कहा इस मामले में आरोपी व्यापक साजिश में शामिल थे। लालू फैमिली को इस मामले में फायदा पहुंचा। कॉन्ट्रेक्ट देने के बदले राबड़ी और तेजस्वी को बेहद कम कीमत पर जमीन मिली। इस मामले में क्विड प्रो क्वो का आरोप इस स्टेज पर नजर आ रहा है। व्हील चेयर पर कोर्ट पहुंचे थे लालू यादव आरजेडी सुप्रीमो लालू यादव कोर्ट में पेश होने के लिए व्हील चेयर पर पहुंचे। इस दौरान उनके साथ राबड़ी देवी, तेजस्वी यादव, प्रेमचंद गुप्ता थे। वे रविवार (12 अक्टूबर) को ही कोर्ट में पेश होने के लिए दिल्ली पहुंच गए थे। लालू और तेजस्वी यादव दिल्ली में मीसा भारती के पंडारा पार्क स्थित आवास पर ठहरे हुए हैं। सीबीआई ने चार्जशीट में आरोप लगाया कि 2004 से 2014 के बीच एक साजिश के तहत पुरी और रांची में भारतीय रेलवे के बीएनआर होटलों को पहले आईआरसीटीसी को ट्रांसफर किया गया और बाद में संचालन, रखरखाव के लिए बिहार की सुजाता होटल्स प्राइवेट लिमिटेड को पट्टे पर दे दिया गया। एजेंसी ने आरोप लगाया कि निविदा प्रक्रिया में धांधली और हेराफेरी की गई और सुजाता होटल्स की मदद के लिए शर्तों में भी बदलाव किया गया। इस चार्जशीट में आईआरसीटीसी के तत्कालीन महाप्रबंधकों वीके अस्थाना और आरके गोयल के अलावा सुजाता होटल्स के डायरेक्टर, चाणक्य होटल के मालिक विजय कोचर और विनय कोचर का भी नाम है। गौरतलब है कि बीती 24 सितंबर को विशेष न्यायाधीश विशाल गोगने ने पूर्व रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव, उनकी पत्नी व बिहार की पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी, उनके बेटे व पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव सहित अन्य आरोपियों को उक्त तारीख पर पेश होने का निर्देश दिया था। अदालत ने मामले में सभी पक्षों की दलीलें सुनने के बाद 29 मई को अपना निर्णय सुरक्षित रख लिया था। यह मामला 2004 से 2009 के बीच रेल मंत्री के रूप में लालू प्रसाद यादव के कार्यकाल के दौरान आईआरसीटीसी होटलों के रखरखाव के ठेकों के आवंटन में भ्रष्टाचार के आरोपों से संबंधित है।

वेनेजुएला की 'आयरन लेडी' मारिया कोरिना मचाडो को मिला नोबेल शांति पुरस्कार

निज संवाददाता : इस साल का नोबेल शांति पुरस्कार वेनेजुएला की 'आयरन लेडी' मारिया कोरिना मचाडो को मिला है। इसी के साथ अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप इस पुरस्कार से चूक गए हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की उम्मीदों पर पानी फेरते हुए 2025 का नोबेल शांति पुरस्कार शुक्रवार (10 अक्तूबर) को वेनेजुएला की मुख्य विपक्षी नेता मारिया कोरिना मचाडो को प्रदान किया गया, जो फिलहाल अपने ही देश में छिपकर रह रही हैं। आयरन लेडी के नाम से भी मशहूर मचाडो का नाम टाइम पत्रिका की 2025 के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों की सूची में शामिल है। इस पुरस्कार की घोषणा करते हुए नोबेल समिति की अध्यक्ष ने मचाडो की शांति की एक साहसी और प्रतिबद्ध समर्थक के रूप में सराहना की, जो बढ़ते अंधकार के बीच लोकतंत्र की लौ जलाए रखती हैं। पुरस्कार की घोषणा के दौरान नोबेल समिति ने कहा कि वह वेनेजुएला के लोगों के लोकतांत्रिक अधिकारों को बढ़ावा देने में मचाडो के अथक कार्य और तानाशाही से लोकतंत्र में एक न्यायसंगत और शांतिपूर्ण बदलाव प्राप्त करने के संघर्ष के लिए उन्हें सम्मानित करती है। मचाडो ने सुमाते नाम के

संगठन की स्थापना की, जो लोकतंत्र की बेहतरी के लिए काम करता है। जो कि मुफ्त और निष्पक्ष चुनावों की मांग करता रहा है। बता दें कि मारिया कोरिना मचाडो साल 2024 के चुनाव से पहले विपक्ष की राष्ट्रपति उम्मीदवार थीं, लेकिन वेनेजुएला की सरकार ने उम्मीदवारी रद्द कर दी। नोबेल प्राइज का ऐलान करते हुए कमेटी की तरफ से कहा गया कि हमने हमेशा से ही बहादुर लोगों का सम्मान किया है। ऐसे लोग जिन्होंने दमन के खिलाफ खड़े होकर आजादी की उम्मीद हमेशा रखी है। कमेटी ने कहा कि पिछले साल मचाडो को खुद को बचाने के लिए छिपकर रहना पड़ा था। इसके बाद भी उन्होंने अपने देश में ही रहना चुना था। मारिया कोरिना माचाडो का जन्म 7 अक्टूबर 1967 को वेनेजुएला की राजधानी करकास में हुआ था। उन्होंने एंड्रेस बेलो कैथोलिक यूनिवर्सिटी से औद्योगिक इंजीनियरिंग की पढ़ाई की और इंस्टिट्यूटो डी एस्टुडीओस सुपीरियोर्स दे एडमिनिस्ट्रासियन से वित्त में ग्रेजुएशन किया है। शांति का नोबेल पुरस्कार हर उस शख्सियत या संस्था को दिया जाता है, जो विश्व शांति, मानवाधिकार और जंग रुकवाने के लिए अहम योगदान देते हैं। मालूम हो इस साल अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप भी नोबेल शांति पुरस्कार की दौड़ में थे, लेकिन वो इससे चूक गए। रिपोर्ट्स के मुताबिक 8 देश ट्रम्प को नोबेल के लिए नॉमिनेट कर चुके थे, जिसमें पाकिस्तान, इस्राइल, अमेरिका, आर्मेनिया, अजरबैजान, माल्टा, कंबोडिया जैसे देशों के नाम है। कई रिपोर्ट्स में यह भी दावा किया गया है कि अर्जेंटीना ने भी ट्रंप को शांति का नोबेल देने की सिफारिश की थी। डोनाल्ड ट्रंप को लेकर लंबे समय से चर्चा थी कि उन्हें यूक्रेन युद्ध और अन्य अंतरराष्ट्रीय संघर्षों में मध्यस्थता के लिए नोमिनेट किया जा सकता है, लेकिन नोबेल समिति ने इस साल का पुरस्कार वेनेजुएला की विपक्षी नेता माचाडो को देने का फैसला किया।

'महिलाओं को देर रात बाहर नहीं निकलना चाहिए'

♦ टीएमसी सांसद सौगत राय ने की विवादित टिप्पणी

निज संवाददाता : दुर्गापुर के एक निजी मेडिकल कॉलेज में हुए सामूहिक बलात्कार पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की टिप्पणी पर विपक्ष ने तीखा हमला बोला है। इसी विवाद के बीच, तृणमूल कांग्रेस के एक और नेता सौगत रॉय ने एक विवादित टिप्पणी की है। उन्होंने दावा किया कि महिलाओं को देर रात बाहर नहीं निकलना चाहिए और पुलिस हर इंच सुरक्षा प्रदान नहीं कर सकती।

मेडिकल कॉलेज की छात्रा से बलात्कार के मामले में तृणमूल सांसद सौगत रॉय ने कहा कि घटना सामने आने के तुरंत बाद पुलिस ने कार्रवाई की। उन्होंने महिलाओं से

सतर्क रहने का आग्रह किया। सौगत ने कहा- बंगाल में ऐसी घटनाएं दुर्लभ हैं। बंगाल में महिलाओं की सुरक्षा किसी भी अन्य राज्य से बेहतर है। हालांकि, महिलाओं को देर रात कॉलेज नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि पुलिस हर जगह गश्त नहीं कर सकती। इससे पहले, मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा था-वह एक निजी कॉलेज है। लड़की की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी उस निजी कॉलेज की है। लड़की रात के 12:30 बजे कैंपस से बाहर कैसे गई? मैंने सुना है कि घटना जंगल इलाके में हुई थी। मुझे नहीं पता कि क्या हुआ। पुलिस जांच कर रही है। निजी कॉलेजों को सुरक्षा कड़ी करनी चाहिए। खासकर छात्राओं की सुरक्षा कड़ी की जानी चाहिए। उन्हें रात में बाहर नहीं जाने देना चाहिए। पुलिस को कैसे पता चलेगा कि रात में कब और कौन बाहर जाएगा? मैं विभिन्न राज्यों के बच्चों से अनुरोध करूंगी कि वे रात में बाहर न जाएं। निजी मेडिकल कॉलेजों की भी जिम्मेदारी है। अगर कोई रात के 12:30 बजे कहीं जाता है, तो पुलिस अब उनके घरों पर नहीं बैठेगी। ममता के इस बयान से राजनीतिक तूफान खड़ा हो गया। इस माहौल में मुख्यमंत्री ने दावा किया कि उनकी टिप्पणी का गलत अर्थ निकाला गया।

क्यों सवालों के घेरे में रहती है संघ की विचारधारा?

दलितों और महिलाओं को संघ में सम्मान नहीं मिलने का लगता है आरोप

दिवाकर पान्डे

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ 100 साल का जश्न मना रहा है। इन सौ सालों में संघ ने देश में अपनी जड़ें काफी मजबूती से जमा ली। यह सब तब हुए जबकि कांग्रेस की सरकारों ने संघ पर प्रतिबंद्ध सहित उसको लेकर जनता के बीच खूब जहर उगला था। यहां तक की संघ की राष्ट्रभक्ति पर भी सवाल खड़े किये गये। यह भ्रम फैलाया गया कि संघ आजादी की लड़ाई के समय संघ के साथ खड़ा था। दलितों और महिलाओं को संघ में सम्मान नहीं मिलने का आरोप लगाया गया। कुल मिलाकर संघ ने सौ सालों में कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। संघ की समाज के प्रति समर्पण और प्रतिबद्धता किसी से छिपी नहीं है, इसीलिये तमाम आरोपों के बाद भी संघ ने अपनी विचारधारा पर कभी समझौता नहीं किया। यह सच है कि संघ पर कई बार प्रतिबंध लगाया गया तो कांग्रेस की ही सरकारों ने समाज के प्रति उनके योगदान की सराहना भी की, लेकिन संघ ने कभी भी अपने ऊपर लगे आरोपों का खुलकर खंडन नहीं किया। ऐसा इसलिये है क्योंकि संघ कभी खुलकर समाज के सामने नहीं आता है। न ही अपने किये सामाजिक कार्यो की वाहवाही बटोरता है, लेकिन संघ को सबसे अधिक विचलित तब होना पड़ता है, जब उस पर देश की आधी आबादी यानि महिलाओं की अनदेखी का आरोप लगता है। संघ पर आरोप लगाया जाता है कि वह अपनी विचारधारा और संगठनात्मक ढांचे में महिलाओं को पुरुषों जितना सम्मान और स्थान नहीं देता। आलोचक कहते हैं कि संघ में महिलाओं को नेतृत्व भूमिका में जगह बहुत कम मिलती है। लेकिन संघ स्वयं इस धारणा का खंडन करता आया है। उसका कहना है कि महिलाओं की गरिमा और शक्ति के बिना राष्ट्र का अस्तित्व ही अधूरा है। यही कारण है कि संघ ने वर्षो से महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल और संस्कार निर्माण की दिशा में कई कार्य योजनाएं चलायी हैं। संघ और उससे जुड़े संगठनों ने महिलाओं की उन्नति, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक उत्थान के लिये अब तक किस प्रकार के कार्य किए हैं, साथ ही कि किन क्षेत्रों में अभी भी और काम की आवश्यकता

महसूस की जाती है। इस पर गौर किया जाये तो देखने में यही आता है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ स्वयं पुरुषों का संगठन है। परन्तु इसकी समानांतर शाखा महिलाओं के लिए ''राष्ट्र सेविका समिति'' के रूप में कार्यरत है। यह संगठन 1936 में डॉ. हेडगेवार के सुझाव से स्थापित हुआ। इसका उद्देश्य महिलाओं में आत्मविश्वास, अनुशासन और राष्ट्रप्रेम की भावना जगाना था। समिति आज देशभर में हजारों शाखाएं चला रही है। इन शाखाओं में युवतियों और महिलाओं को मानसिक व शारीरिक दृष्टि से सशक्त बनाने की दिशा में विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। दंड, योग, गीत, व्याख्यान, साहित्य अध्ययन और विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं इनके नियमित आयोजन का हिस्सा हैं। इस समिति के माध्यम से अनेक महिला कार्यकर्ता समाज सेवा के क्षेत्र में आगे आयीं। ग्रामीण क्षेत्रों, आदिवासी इलाकों और शहरी बस्तियों में समिति की सेविकाएं शिक्षा का प्रसार कर रही हैं, महिलाओं को आत्मनिर्भर बना रही हैं और संस्कार शिक्षा भी दे रही हैं। संघ का मानना है कि भारत का स्वर्णिम भविष्य केवल शिक्षित और संस्कारित पीढ़ी के निर्माण से ही संभव है। इसी उद्देश्य से संघ की प्रेरणा से अनेक शिक्षण संस्थानों की स्थापना हुई, जिनमें लड़कियों की संख्या उल्लेखनीय है। विद्या भारती नामक शिक्षण संगठन आज भारत का सबसे बड़ा शैक्षिक नेटवर्क है। इसके विद्यालयों में बालिकाओं को संस्कारित शिक्षा प्रदान की जाती है। विज्ञान, गणित और कला जैसे विषयों के साथ नृत्य, संगीत व योग का अभ्यास भी कराया जाता है। आदिवासी बस्तियों में चलाए जा रहे 'एकल विद्यालय' योजनाओं से बड़ी संख्या में लड़कियां शिक्षा से जुड़ी हैं। इन विद्यालयों से दूर-दराज की पहाड़ी और वनवासी बालिकाओं तक शिक्षा पहुंच रही है। छात्राओं को छात्रवृत्ति और मार्गदर्शन देकर उच्च शिक्षा की ओर अग्रसर करने पर भी बल दिया जाता रहा है। संघ से जुड़े संगठनों का प्रयास रहा है कि शिक्षा केवल पढ़ाई लिखाई तक सीमित न होकर चरित्र निर्माण और राष्ट्रप्रेम से भी जुड़ी हो। महिलाओं के लिए स्वास्थ्य संबंधी अनेक योजनाएं संघ व उसकी सहयोगी संस्थाएं चला रही हैं। सेवा भारती संगठन देशभर में हजारों सेवा केंद्र चला रहा है। इनमें महिलाओं के लिए निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर लगाए जाते हैं। ग्रामीण और शहरी इलाकों में बालिकाओं के लिए पोषण आहार वितरण, आयरन की गोलियां, स्वास्थ्य परामर्श और स्वास्थ्य शिक्षा का कार्य होता है। गर्भवती महिलाओं की मदद, प्रसव के समय सहयोग, और बच्चों की देखभाल से जुड़ी योजनाओं के पीछे संघ की स्वयंसेविकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। महिला जागरूकता अभियान चलाकर मासिक धर्म स्वच्छता, पोषण और परिवार स्वास्थ्य जैसे विषयों पर ज्ञान फैलाया जाता है। संघ का उद्देश्य केवल महिलाओं को शिक्षित करना भर नहीं है, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर बनाना भी है। अनेक सेवा प्रकल्पों में महिलाओं को सिलाई, बुनाई, कढ़ाई, हस्तशिल्प और भोजन प्रसंस्करण जैसी विधाओं का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके माध्यम से महिलाएं परिवार के आर्थिक बोझ को साझा करती हैं और आत्मसम्मान के साथ समाज में योगदान देती हैं।

आलोचक कहते हैं कि यदि महिला और पुरुष समान हैं तो महिलाओं को संघ की मुख्य संरचना में सम्मिलित क्यों नहीं किया गया। उनका मत है कि महिला नेतृत्व को पर्याप्त स्थान नहीं मिल पाता। संघ का पक्ष बिल्कुल भिन्न है। उसका कहना है कि पुरुष और महिला की भूमिकाओं और प्रकृति में भिन्नता है। इसीलिए दोनों के लिए अलग-अलग मंच बनाना ही उचित है। 'राष्ट्र सेविका समिति' इसी विचार पर संगठित है और वर्षों से स्वतंत्र रूप से कार्य कर रही है। संघ का दावा है कि समिति की महिलाएं सामाजिक उन्नति और सेवा कार्यों में कहीं अधिक सक्रिय हैं और यह विभाजन किसी बाधा के बजाय जिम्मेदारियों का स्वाभाविक बंटवारा है।

शेष पेज 8 पर....

मध्यप्रदेश को मुंबई से मिला ऐतिहासिक निवेश प्रस्ताव

तनमय जैन

भोपाल : मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश अब ''स्पीड ऑफ डूइंग बिजनेस'' की नई परिभाषा गढ़ रहा है। मुंबई में आयोजित 'इंटरएक्टिव सेशन ऑन इन्वेस्टमेंट ऑपर्च्युनिटीज इन पॉवर एंड रिन्यूएबल एनर्जी इक्विपमेंट मैन्युफैक्चरिंग एंड वाइट गुड्स इन मध्यप्रदेश' कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने उद्योग जगत के दिग्गजों के साथ संवाद करते हुए निवेशकों को प्रदेश की नई औद्योगिक नीतियों, तैयार इंफ्रास्ट्रक्चर और तेज़ प्रक्रिया प्रणाली से अवगत कराया।

मुख्यमंत्री ने बताया कि इस विशेष सत्र के माध्यम से प्रदेश को ₹74,300 करोड़ से अधिक के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं, जिनमें ₹19,900 करोड़ की राशि रिन्यूएबल एनर्जी सेक्टर से संबंधित है। इन प्रस्तावों से 7000 से अधिक रोजगार सृजित होने की संभावना जताई गई है।निवेशकों के लिए मध्यप्रदेश बना आकर्षण का केंद्रमुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश सरकार ने उद्योगों की स्थापना के लिए व्यवस्थाओं को सरलीकृत किया है। ''ईज ऑफ डूइंग बिजनेस'' को एक कदम आगे बढ़ाते हुए 18 नई औद्योगिक नीतियां लागू की गई हैं। इससे निवेशकों को स्पष्ट नीति, तेज़ मंजूरी प्रक्रिया और ज़मीनी सहयोग प्राप्त हो रहा है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में संभागीय स्तर पर इंडस्ट्री कॉन्क्लेव आयोजित किए जा रहे हैं, जिससे छोटे शहरों को भी उद्योगों से जोड़ा गया है।नर्मदापुरम का 'मैन्युफैक्चरिंग ज़ोन' बना मुख्य आकर्षणमुख्यमंत्री ने बताया कि कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य था नर्मदापुरम (मोहासा-बाबई) में स्थित भारत के पहले अत्याधुनिक 'मैन्युफैक्चरिंग ज़ोन फॉर पावर एंड रिन्यूएबल एनर्जी इक्विपमेंट' के फेज़ 2 में निवेश को प्रोत्साहित करना। उन्होंने स्पष्ट किया कि भूमि आवंटन के लिए अंतिम तिथि 12 अक्टूबर 2025 है, जिससे निवेशकों को एक स्पष्ट दिशा और समयबद्धता प्राप्त होती है।रणनीतिक भागीदारी की नई शुरुआतमुख्यमंत्री डॉ. यादव ने महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों का उल्लेख करते हुए कहा कि अब समय है कि यह सांस्कृतिक साझेदारी, औद्योगिक साझेदारी में बदले। उन्होंने कहा-महाराष्ट्र की औद्योगिक विशेषज्ञता और मध्यप्रदेश की अनंत संभावनाएं मिलकर देश को विकास की नई दिशा दे सकती हैं। यह सिर्फ एक संवाद नहीं, बल्कि दो प्रगतिशील राज्यों के बीच नई औद्योगिक भागीदारी की शुरुआत है। वन-टू-वन मीटिंग्स और राउंडटेबल्सकार्यक्रम में 400 से अधिक निवेशकों और उद्योगपतियों की भागीदारी रही। साथ ही 20 से अधिक वन-टू-वन मीटिंग्स आयोजित हुई, जिनमें टेक्सटाइल, ऑटोमोबाइल, फार्मा, इलेक्ट्रॉनिक्स, रिन्यूएबल एनर्जी आदि क्षेत्रों के दिग्गज शामिल हुए। वहीं, दो राउंडटेबल बैठकें भी हुईं। पहली, डिप्लोमैट्स के साथ और दूसरी रिन्यूएबल एनर्जी उपकरण निर्माताओं के साथ। ''स्पीड ऑफ डूइंग बिजनेस'' बनी नई पहचानमुख्यमंत्री ने कहा-आज का निवेशक केवल ईज और कॉस्ट ऑफ डूइंग बिजनेस नहीं देखता, वह स्पीड भी देखता है। हम निवेश निर्णयों को इतनी तेजी से लागू कर रहे हैं कि यह देश में एक नया बेंचमार्क बन रहा है। उन्होंने मुंबई को सपनों का शहर बताते हुए कहा कि जैसे मुंबई की लोकल ट्रेनें इस शहर की लाइफलाइन हैं, वैसे ही मध्यप्रदेश की निवेशक-हितैषी नीतियां उद्योगों की ग्रोथ की लाइफलाइन बनेंगी।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'विकसित भारत 2047' विजन से प्रेरणामुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'विकसित भारत 2047' विजन को प्रदेश के विकास और औद्योगिक विस्तार का मार्गदर्शक बताया। उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भर भारत की दिशा में मध्यप्रदेश हर कदम पर मजबूती से आगे बढ़ रहा है। वहीं, मुंबई में आयोजित यह कार्यक्रम न सिर्फ निवेशकों के लिए एक सुनहरा अवसर साबित हुआ, बल्कि मध्यप्रदेश की नीति, नीयत और नजरिए को उद्योग जगत के समक्ष प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने वाला मंच भी रहा।

आठ ब्रिटिश विश्वविद्यालय भारत में जल्द ही खोलेंगे अपने परिसर

निज संवाददाता : भारत और ब्रिटेन ने गुरुवार को मुंबई में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और कीर स्टार्मर के बीच हुई बैठक के बाद घोषणा की कि साउथेम्प्टन विश्वविद्यालय द्वारा जुलाई में गुड़गांव में अपना परिसर खोलने के बाद आठ और ब्रिटिश विश्वविद्यालय जल्द ही भारत में अपना परिचालन शुरू करेंगे। कुछ भारतीय शिक्षाविदों ने आशंका व्यक्त की है कि इतने सारे विदेशी संस्थानों के आने से भारतीय सार्वजनिक विश्वविद्यालयों के लिए धन की कमी होगी।

उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि ये विदेशी संस्थान उच्च शुल्क वसूल सकते हैं और उन्हें लाभ कमाने और धन वापस अपने देश ले जाने की अनुमति होगी। जिन आठ विश्वविद्यालयों के भारतीय परिसर स्थापित करने की उम्मीद है, वे हैं लिवरपूल विश्वविद्यालय, लैंकेस्टर विश्वविद्यालय (दोनों बेंगलुरु में), यॉर्क विश्वविद्यालय, एबरडीन विश्वविद्यालय, ब्रिस्टल विश्वविद्यालय (सभी मुंबई में), क्वींस विश्वविद्यालय बेलफास्ट, कोवेंट्री विश्वविद्यालय और सरे विश्वविद्यालय (सभी गिफ्ट सिटी, गांधीनगर में)। बेंगलुरु और मुंबई के पांच परिसर विदेशी संस्थानों के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नियमों के तहत संचालित होंगे, जो शिक्षण के अलावा अनुसंधान को एक अनिवार्य गतिविधि बनाते हैं। गांधीनगर स्थित तीनों परिसर अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण के नियमों के तहत संचालित होंगे, जो गिफ्ट सिटी जैसे विशेष आर्थिक क्षेत्रों (एसईजेड) के लिए एक नियामक संस्था है। अभी यह स्पष्ट नहीं है कि वे शोध करने के लिए बाध्य होंगे या नहीं। पीएम मोदी ने संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में कहा-यह बहुत खुशी की बात है कि नौ ब्रिटिश विश्वविद्यालय भारत में अपने परिसर स्थापित करने जा रहे हैं। स्टार्मर ने कहा-सभी ब्रिटिश विश्वविद्यालय यहीं भारत में अपने परिसर स्थापित करेंगे, जिससे ब्रिटेन भारत में उच्च शिक्षा का सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रीय प्रदाता बन जाएगा। स्टार्मर के कार्यालय द्वारा जारी एक मीडिया बयान में कहा गया है कि भारत में ब्रिटिश विश्वविद्यालयों के विस्तार के माध्यम से ब्रिटेन का उच्च शिक्षा क्षेत्र ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था को 50 मिलियन पाउंड तक बढ़ाएगा।

बयान में कहा गया है-वर्तमान में, भारत के विश्वविद्यालयों में 4 करोड़ छात्र हैं, लेकिन 2035 तक 7 करोड़ स्थानों की आवश्यकता होगी। ब्रिटेन का विश्व-प्रसिद्ध उच्च शिक्षा क्षेत्र हज़ारों भारतीय छात्रों को घर से बाहर जाए बिना ब्रिटिश डिग्री के लिए अध्ययन करने का अवसर देकर इस मांग का लाभ उठा रहा है-और साथ ही हमारी अर्थव्यवस्था को लाखों पाउंड का लाभ पहुँचा रहा है। मीडिया बयान में आगे कहा गया है कि यॉर्क, एबरडीन, ब्रिस्टल, लिवरपूल और कोवेंट्री विश्वविद्यालय तथा क्वीन्स यूनिवर्सिटी बेलफास्ट अगले साल अपने भारतीय परिसर खोलेंगे। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति फुरकान क़मर ने भारतीय सार्वजनिक विश्वविद्यालयों पर पड़ने वाले संभावित प्रभाव पर चिंता व्यक्त की।.

मध्यप्रदेश में कलस्टर आधारित सब्जी उत्पादन से बदल गई किसानों की तकदीर

प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना से 14 जिलों के 3000 किसान उठा रहे हैं लाभ

अजय कुमार मोहता

मध्यप्रदेश की डॉ.मोहन यादव सरकार खेती के विकास व किसानों की भलाई पर खूब जोर दे रही है। इसके लिए राज्य सरकार ने कई नई योजनाओं की शुरुआत की है। इनमें प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना समेत अन्य कई योजनाएं शामिल हैं। इसी के तहत परंपरागत खेती से आय में बढ़ोतरी की राह तलाश रहे किसानों के लिए वाटरशेड विकास घटक के तहत प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना 2.0 किसी वरदान से कम नहीं है। इस योजना के अंतर्गत प्रदेश के 14 जिलों के 3000 किसान अब कलस्टर आधारित सब्जी उत्पादन से जुड़कर ₹40 से 50 हजार तक की आय अर्जित कर रहे हैं। यह पहल न सिर्फ उनकी आर्थिक स्थिति सशक्त बना रही है, बल्कि गांवों में ग्रामीण आजीविका को भी नई दिशा दे रही है।रतलाम जिले के नौगांवाकला के किसान तेजपाल की मिसाल ले सकते हैं। बड़ी बात यह कि उनके जैसे किसान जो पहले सिर्फ खाने लायक सब्जी उगाते थे, अब आधा एकड़ में टमाटर और मिर्च की व्यावसायिक खेती कर रहे हैं। यह बदलाव

संभव हुआ है वाटरशेड विकास घटक की प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना 2.0 के नवाचार से जिसने पहली बार जल संरक्षण को आजीविका से जोड़ा है।

100 से 150 किसानों का चयन किया गयायोजना के तहत प्रत्येक परियोजना में सिंचाई की सुविधा वाले 100 से 150 किसानों का चयन किया गया। इन्हें तकनीकी प्रशिक्षण देने के लिए 835 लीड वेजिटेबल फार्मर चिन्हित किए गए और उन्हें मास्टर ट्रेनर बनाकर गांवों में सब्जी उत्पादन की वैज्ञानिक पद्धति सिखाई गई। सरकार किसानों को प्रति किसान ₹30 हजार तक का अनुदान भी दे रही है, जिससे वे खाद, दवाइयों और अन्य संसाधनों की खरीद कर सकें। इतना ही नहीं 50 से 60 किसानों के बीच गांव में ही शेड नेट नर्सरी तैयार की जा रही है, जिससे उन्नत किस्म की पौध समय पर उपलब्ध हो सके। इन नर्सरियों के लिए ₹1.30 लाख तक की सहायता भी दी जा रही है। अगले सीजन में और 9000 किसान होंगे लाभान्वितइस योजना की सफलता को देखते हुए रबी सीजन में 36 जिलों की 85 परियोजनाओं में विस्तार किया जा रहा है, जिससे लगभग 9000 और किसान लाभान्वित होंगे। वर्तमान में धार, रतलाम, खरगोन, बड़वानी, सागर, गुना, इंदौर, श्योपुर सहित 14 जिलों में इसका सफल संचालन हो रहा है।तकनीक और योजना पर आधारित खेती के सहारे किसान बढ़ रहे समृद्धि की ओर संचालक वाटरशेड श्री अवि प्रसाद के अनुसार यह योजना किसानों को आत्मनिर्भर बनाने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। सरकार की इस पहल से साफ है कि अब किसान सिर्फ मौसम पर नहीं बल्कि तकनीक और योजना पर आधारित खेती से समृद्धि की ओर बढ़ रहे हैं।

'बांग्लादेश के मदरसों में सिखाई जाती है संस्थागत रूप से हिंदू-घृणा'

तस्लीमा ने फिर इस्लामी शिक्षा पर साधा निशाना

निज संवाददाता : उनका धर्म इस्लाम है। लेकिन वे हमेशा से धार्मिक कट्टरवाद के खिलाफ रही हैं। इसीलिए प्रसिद्ध लेखिका तस्लीमा नसरीन को उनके वतन से निकाल दिया गया था। वे वर्तमान में विदेश में रह रही हैं। उन्होंने अपनी लेखनी में एक विरोधात्मक रुख बनाए रखा है। वे अक्सर सोशल मीडिया पर विभिन्न समसामयिक मुद्दों पर अपनी राय व्यक्त करती हैं। इन पर विवादों की कोई कमी नहीं है। बेशक, तस्लीमा इससे डरती नहीं हैं। इस बार, उन्होंने बांग्लादेश के मदरसों में शिक्षा की स्थिति पर एक रील साझा की, जिसकी कड़ी आलोचना हो रही है।

लेखिका का दावा है कि बांग्लादेश के मदरसों में हिंसा, घृणा और सांप्रदायिकता संस्थागत रूप से सिखाई जाती है।तस्लीमा द्वारा फेसबुक पर साझा की गई रील में एक मदरसे में बच्चों की एक कक्षा दिखाई गई है। अगर यह विषय हिंदू त्योहार में शामिल किया जाता है, तो इससे मुसलमानों को क्या नुकसान होता है? रील में, शिक्षक यह

कहते हुए सुनाई देते हैं-अगर आप हिंदू पूजा में जाते हैं, तो इस्लाम कमजोर हो जाता है। छोटे लड़के इस शब्द को बार-बार दोहरा रहे हैं। इस तरह का पाठ निस्संदेह तीव्र हिंदू विरोध का संकेत है।

तस्लीमा ने यही कहा। रील शेयर करते हुए उन्होंने लिखा-बांग्लादेश के मदरसों में संस्थागत रूप से हिंदुओं के खिलाफ हिंसा, घृणा, असभ्यता, बर्बरता और सांप्रदायिकता सिखाई जाती है। इस वीडियो की प्रामाणिकता की पुष्टि नहीं की गई है। गौरतलब है कि बांग्लादेश में इस्लामी चरमपंथ का उदय काफी स्पष्ट हो गया है। हिंदू उत्पीड़न बढ़ गया है। वहां के अल्पसंख्यक हर पल डर में रहते हैं। यूनुस की अंतरिम सरकार को इसके लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आलोचना का भी सामना करना पड़ रहा है। हालांकि यूनुस खुद दावा करते हैं कि बांग्लादेश में हिंदू उत्पीड़न की कोई घटना नहीं हो रही है। लेकिन, वहां के मदरसे में पढ़ाई का जो वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है, उससे पता चलता है कि बच्चों का हिंदू धर्म के विरोध में ब्रेनवॉश किया जा रहा है।

इसीलिए उन्हें सिखाया जा रहा है-अगर आप हिंदुओं की पूजा करते हैं, तो इस्लाम कमजोर हो जाता है। असली शिक्षा आपको उदार होना सिखाती है, मानवता सिखाती है। यह धर्म के अंधेरे पक्ष को दूर करती है और उसे ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित करती है। लेकिन बांग्लादेश के मदरसों में ठीक इसके उलट तस्वीर देखने को मिलती है। इसलिए तस्लीमा नसरीन द्वारा ऐसी शिक्षा की निंदा स्वाभाविक है।

बिहार विधानसभा चुनाव में दलित वोटरों को साधने की तैयारी में कांग्रेस

रायबरेली में दलित युवक की पीटकर हत्या और सुप्रीम कोर्ट में सीजेआई पर जूता फेंकने की घटना को पार्टी ने बनाया बड़ा मुद्दा

निज संवाददाता : बिहार के चुनावी मौसम में इस बार हवा कुछ अलग बह रही है। जहां एक तरफ विकास, रोजगार और बुनियादी सुविधाओं की बातें जोर पकड़ रही हैं, वहीं रायबरेली में दलित युवक हरिओम वाल्मीकि की पीट-पीटकर हत्या और सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस बीआर गवई पर जूता उछालने की घटना अब बिहार विधानसभा चुनाव का बड़ा मुद्दा बनने जा रही हैं। कांग्रेस पार्टी इन घटनाओं को हाथों-हाथ लेकर दलित और पिछड़े वर्ग के वोटरों को साधने की पूरी तैयारी में जुट गई है। पार्टी के नेता कहते हैं कि ये सिर्फ दो घटनाएं नहीं, बल्कि भाजपा शासित राज्यों में दलितों पर हो रहे अत्याचारों का जीता-जागता सबूत हैं।

सबसे पहले बात करते हैं रायबरेली की उस दर्दनाक घटना की, जो पूरे देश को झकझोर रही है। 2 अक्टूबर 2025 को रायबरेली के ऊंचाहार इलाके में 38 साल के दलित युवक हरिओम वाल्मीकि को गांव वालों ने चोरी के शक में इतनी बेरहमी से पीटा कि उसकी जान चली गई। हरिओम अपनी ससुराल ईश्वरदासपुर आया था, लेकिन गांव वालों ने उसे ड्रोन चोर समझ लिया। दो घंटे तक लाठी-डंडों, बेल्ट और लात-घूंसों से पिटाई होती रही। हरिओम कराहते हुए बार-बार राहुल गांधी-राहुल गांधी का नाम ले रहा था, मानो मदद की गुहार लगा रहा हो। हैरानी की बात यह है कि पुलिस मौके पर पहुंची, लेकिन हरिओम को अस्पताल ले जाने की बजाय गांव वालों के हवाले छोड़ दिया। हरिओम की पत्नी का कहना है कि पुलिस ने उसे मरने के लिए छोड़ दिया। किसी ने इस पूरी घटना के तीन वीडियो बना लिए, जो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो चुके हैं। वीडियो में हरिओम की चीखें और उसकी आखिरी सांसें साफ सुनाई दे रही हैं, जो किसी भी इंसान का कलेजा चीर सकती हैं। पुलिस ने इस मामले में चार लोगों को गिरफ्तार किया है, लेकिन परिवार का आरोप है कि असली दोषी अब भी आजाद घूम रहे हैं। हरिओम के पिता गंगादीन ने बताया कि उनका बेटा मजदूरी करता था और परिवार की कमर टूट गई है।

इस घटना ने एक बार फिर मॉब लिंचिंग के पुराने घावों को कुरेद दिया है, जहां दलित और कमजोर वर्ग के लोग आसानी से निशाना बन जाते हैं। कांग्रेस ने इसे समाज पर कलंक बताया और भाजपा सरकार पर सवाल उठाए कि क्या यूपी में जंगलराज चल रहा है?वीडियो वायरल होने के बाद विपक्षी नेता राहुल गांधी ने तुरंत हरिओम के परिवार से फोन पर बात की। उन्होंने परिवार को न्याय का भरोसा दिलाया और अपने एक्स हैंडल पर एक भावुक पोस्ट शेयर किया। राहुल ने लिखा, रायबरेली में दलित युवक हरिओम वाल्मीकि की निर्मम हत्या सिर्फ एक इंसान की नहीं- इंसानियत, संविधान और न्याय की हत्या है।

आज भारत में दलित, आदिवासी, मुसलमान, पिछड़े और गरीब- हर उस व्यक्ति को निशाना बनाया जा रहा है, जिसकी आवाज कमजोर है, जिसकी हिस्सेदारी छीनी जा रही है और जिसकी जिंदगी सस्ती समझी जाती है। देश में नफरत, हिंसा और भीड़तंत्र को सत्ता का संरक्षण मिला हुआ है जहां संविधान की जगह बुलडोजर ने ले ली है और इंसाफ की जगह डर ने। मैं हरिओम के परिवार के साथ खड़ा हूं- उन्हें न्याय जरूर मिलेगा। भारत का भविष्य समानता और मानवता पर टिका है और यह देश चलेगा संविधान से, भीड़ की सनक से नहीं। राहुल की यह पोस्ट लाखों लोगों तक पहुंच चुकी है और दलित समुदाय में काफी सराही जा रही है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, जो खुद दलित समुदाय से हैं, ने भी इस घटना की कड़ी निंदा की। उन्होंने कहा कि मॉब लिंचिंग और बुलडोजर अन्याय आज की भयावह हकीकत बन गए हैं। खरगे और राहुल ने संयुक्त बयान में इसे संविधान के खिलाफ अपराध बताया। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने पीड़ित परिवार से मिलकर सरकार से नौकरी और मुआवजे की मांग की। कांग्रेस सांसद तनुज पुनिया और राजेंद्र गौतम जैसे नेता भी परिवार से मिले और बोले कि भाजपा में दलितों का उत्पीड़न हो रहा है। यह घटना फतेहपुर के दलित समाज में आक्रोश पैदा कर रही है, जहां हरिओम को राहुल का नाम लेने पर और पीटा गया। इस घटना के ठीक बाद, 6 अक्टूबर 2025 को सुप्रीम कोर्ट में एक और चौंकाने वाली वारदात हुई। चीफ जस्टिस बीआर गवई, जो खुद दलित समुदाय से आते हैं, पर 71 साल के वकील राकेश किशोर ने जूता उछाल दिया। राकेश बरेली का रहने वाला है और खुद को सनातन धर्म का रक्षक बताता है। वह कहता है कि सीजेआई की एक पुरानी टिप्पणी से आहत था। दरअसल, 16 सितंबर को एक याचिका पर सुनवाई के दौरान जस्टिस गवई ने मध्य प्रदेश के खजुराहो मंदिर में भगवान विष्णु की सिर कटी मूर्ति को लेकर याचिकाकर्ता से मजाक में कहा था कि मूर्ति से प्रार्थना करो, शायद वह अपना सिर वापस लगा ले। राकेश ने इसे सनातन धर्म का अपमान माना और कोर्ट में ही जूता फेंक दिया। हालांकि, सुरक्षाकर्मियों ने उसे तुरंत पकड़ लिया। राकेश ने बाद में कहा-मुझे कोई अफसोस नहीं, ये सब ऊपर वाले ने कराया। मैं सनातन का अपमान सहन नहीं कर सकता। हैरानी की बात यह है कि राकेश पर कोई केस दर्ज नहीं हुआ। चीफ जस्टिस गवई ने खुद इसे अनदेखा करने को कहा और बोले, इसे अनदेखा कर दीजिए, मैं इससे विचलित नहीं होने वाला। लेकिन सोशल मीडिया पर इस घटना ने तूफान मचा दिया। कुछ लोग इसे दलितों के खिलाफ नफरत का प्रतीक बता रहे हैं, तो कुछ इसे न्यायपालिका पर हमला। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जस्टिस गवई से फोन पर बात की और घटना पर चिंता जताई। सोनिया गांधी ने भी निंदा की। विपक्षी नेता जैसे अखिलेश यादव और संजय राउत ने इसे भाजपा की साजिश बताया और कहा कि यह संविधान पर हमला है। राकेश का बयान कि दूसरे समुदाय के जज सनातन का मजाक उड़ाते हैं ने दलित समाज को और भड़का दिया है।अब सवाल यह है कि ये दोनों घटनाएं बिहार चुनाव में कैसे मुद्दा बन रही हैं? बिहार विधानसभा चुनाव 2025 की घोषणा हो चुकी है। दो चरणों में वोटिंग होगी- 6 नवंबर और 11 नवंबर को, जबकि नतीजे 14 नवंबर को आएंगे। यहां दलित वोटरों की संख्या करीब 16-19 प्रतिशत है, जो चुनावी नतीजों को पलट सकती है। कांग्रेस पार्टी इन घटनाओं को अपनी रणनीति का हिस्सा बना रही है।

पार्टी की थीम है- दलित गरीब हो या सीजेआई, भाजपा राज में ये निशाने पर, संविधान-लोकतंत्र खतरे में। कांग्रेस ने बिहार में अपना प्रदेश अध्यक्ष दलित समुदाय से आने वाले राजेश राम को बनाया है, जो काफी पहले से तैयारी का हिस्सा है। राहुल गांधी हर सभा में दलित मुद्दों को उठा रहे हैं। वह संविधान पर हमले, आरक्षण और जाति जनगणना की बात करते हैं। हाल ही में उन्होंने नालंदा और गया में अत्यंत पिछड़ा वर्ग सम्मेलन किया, जहां सीएम नीतीश कुमार को चुनौती दी। राहुल ने सरकारी नौकरियों और ठेकों में ईबीसी आरक्षण का दांव चला, जो बिहार के पिछड़ों को लुभा रहा है। कांग्रेस महागठबंधन में 55 सीटों पर लड़ने की तैयारी में है, जहां राजद के साथ सीट बंटावारे पर मुहर लग चुकी है। पार्टी सीमांचल इलाके पर फोकस कर रही है, जहां मुस्लिम और दलित वोटर ज्यादा हैं। बिहार में दलित वोटरों का इतिहास देखें तो वे कभी एकमुश्त किसी पार्टी को नहीं जाते। रविदास और पासवान जातियां प्रमुख हैं। एनडीए में जीतन राम मांझी और चिराग पासवान खुद को दलितों का हितैषी बताते हैं, लेकिन कांग्रेस का कहना है कि भाजपा-जदयू सरकार में दलित अत्याचार बढ़े हैं।

चुनाव आयोग पर भी आरोप लग रहे हैं कि वोटर लिस्ट में फर्जीवाड़ा हो रहा है। कई जगह जिंदा दलितों को मृत दिखाया गया है, जबकि मृतकों को जिंदा। कांग्रेस का दावा है कि यह गरीब-दलितों के वोट चुराने की साजिश है। राहुल की वोटर अधिकार यात्रा ने 23 जिलों में वोट चोरी को मुद्दा बनाया। विपक्षी पार्टियां जैसे राजद और सीपीआईएमएल भी दलितों पर फोकस कर रही हैं। सीपीआईएमएल के दीपांकर भट्टाचार्य कहते हैं कि बिहार में दलित बस्तियों में आग लगाकर बेदखली हो रही है, मजदूरों के हाथ काटे जा रहे हैं। पिछले 20 साल की सरकार में बेरोजगारी और पलायन चरम पर है। प्रशांत किशोर की जनसुराज पार्टी भी नए विकल्प के रूप में उभर रही है, लेकिन राहुल और तेजस्वी का भरोसा दलितों को अपनी ओर खींच रहा है। ये मुद्दे चुनाव को नया मोड़ दे सकते हैं। जहां भाजपा विकास और मोदी-योगी की छवि पर जोर दे रही है, वहीं कांग्रेस दलितों की भावनाओं को भुनाने की कोशिश में है। रायबरेली और सीजेआई घटना ने दलितों में गुस्सा भरा है, जो बिहार में वोट बन सकता है। अगर कांग्रेस सफल हुई, तो यह न सिर्फ बिहार बल्कि पूरे देश की राजनीति को प्रभावित करेगा। अंत में, सवाल यही है-क्या संविधान और न्याय की लड़ाई चुनावी जीत दिलाएगी या विकास की बातें हावी रहेंगी? बिहार के मतदाता ही फैसला करेंगे।

विधानसभा चुनाव से पहले बंगाल को मिला बड़ा तोहफा

केंद्र सरकार ने दिया 680 करोड़ का अनुदान

निज संवाददाता : राज्य में विधानसभा चुनाव से पहले केंद्र सरकार ने बंगाल को एक बड़ा तोहफा दिया है। केंद्र सरकार ने पंद्रहवें वित्त आयोग के तहत बंगाल सरकार को 680 करोड़ रुपये अनुदान दिए हैं। केंद्र यह धनराशि पंचायती राज संस्थाओं या ग्रामीण विकास संस्थाओं के लिए आवंटित करता है, जिसकी पहली किस्त अक्टूबर में राज्य कोष में जमा कर दी गई थी। ग्रामीण बंगाल की हजारों पंचायतों, सैकड़ों प्रखंडों और कई जिला परिषदों को इसका लाभ मिलेगा। केंद्र सरकार ने कहा है कि राज्य सरकार को चालू वित्त वर्ष में संयुक्त (मूलभूत) अनुदान क्षेत्र के अंतर्गत देय धनराशि की पहली किस्त के रूप में यह धनराशि प्राप्त हुई है।

केंद्र सरकार ने बीते सोमवार को राज्य को यह धनराशि जारी कर दी। बंगाल की 3,224 ग्राम पंचायतों, 335 प्रखंडों और 21 जिला परिषदों को इसका लाभ मिलने वाला है। हालांकि यह नए वित्त वर्ष की

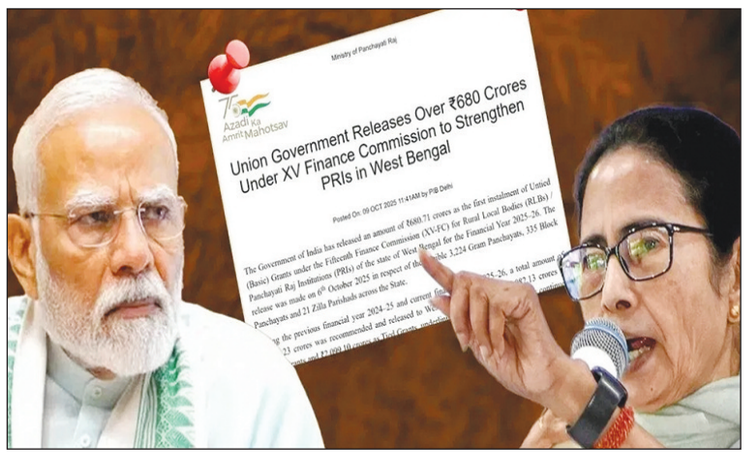

पहली किस्त है, लेकिन इस संबंध में 'केंद्रीय अनुदान' पिछले कुछ महीनों से राज्य को मिल रहा है। केंद्र सरकार की ओर से जारी बयान में बताया गया कि इस साल फरवरी तक राज्य को पिछले वित्तीय वर्ष यानी 2024-25 के लिए धनराशि मिल चुकी है। पिछले वित्तीय वर्ष की चार किश्तों और नए वित्तीय वर्ष की पहली किश्त को मिलाकर केंद्र अब तक राज्य को 4,181 करोड़ रुपये दे चुका है। इसमें से 2,820 करोड़ रुपये संलग्न अनुदान के तहत और 2,099 करोड़ रुपये प्रतिबंधित अनुदान क्षेत्र के तहत दिए गए हैं। केंद्र 15वें वित्त आयोग के तहत संलग्न अनुदान क्षेत्र के तहत यह धनराशि हस्तांतरित करता है। यह धनराशि मुख्य रूप से ग्रामीण विकास से जुड़े विभिन्न विकास क्षेत्रों, जैसे सड़कें, स्ट्रीट लाइट, सौर ऊर्जा, के लिए आवंटित की जाती है और प्रतिबंधित अनुदान, गांवों में आपातकालीन सेवाओं, जैसे वर्षा जल शोधन, तालाब निर्माण सहित विभिन्न विकास कार्यों के लिए आवंटित धनराशि होती है। केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री सुकांत मजूमदार ने कहा-जब ममता बनर्जी और उनके तृणमूल नेता लगातार केंद्र को बदनाम कर रहे हैं, उस माहौल में, यह अनुदान साबित करता है कि केंद्र सरकार बंगाल के ग्रामीण विकास के लिए कुशलता से काम कर रही है। दूसरी ओर, तृणमूल के सूत्रों का दावा है कि राज्य इससे कहीं ज्यादा का हकदार है। सभी दस्तावेज और जानकारी केंद्र को पहले ही सौंप दी गई थी, जिसके चलते, ग्रामीण विकास क्षेत्र को पैसे की पहली किस्त दे दी गई।

रानाघाट-बनगांव रेलवे पर दूसरी लाइन के लिए 396 करोड़ रुपये आवंटित

यात्रियों ने जल्द काम शुरू करने की मांग की

निज संवाददाता : रेलवे ने आखिरकार रानाघाट-बनगांव रेलवे पर दूसरी लाइन बिछाने के लिए एक बड़ा कदम उठाया है। रेल मंत्रालय ने इस परियोजना के लिए 396 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। इसके बाद से, नदिया और उत्तर 24 परगना में खुशी की लहर दौड़ गई है। कई दिनों से, यात्री और व्यापारी एक ही लाइन पर ट्रेनों की आवाजाही के कारण देरी, क्रॉसिंग की समस्या और बार-बार सिग्नल जाम की समस्या से जूझ रहे थे। उस जाम से उबरने के बाद, आखिरकार परियोजना को मंज़ूरी मिलने से सभी को राहत मिली।पूर्व रेलवे के सूत्रों के अनुसार, रानाघाट-बनगांव लाइन की लंबाई लगभग 33 किलोमीटर है।

इस मार्ग पर ट्रेनों की आवाजाही का दबाव वर्तमान में 114 प्रतिशत तक पहुंच गया है, जिसका अर्थ है कि सेवा क्षमता से काफी अधिक चल रही है। पिछले कुछ वर्षों में इस खंड पर ट्रेनों की संख्या बढ़ने के साथ-साथ एसी लोकल ट्रेनें भी जुड़ गई हैं। नतीजतन, यात्री हर दिन अपने गंतव्य तक देरी से पहुंच रहे हैं। रेलवे को उम्मीद है कि दूसरी लाइन चालू होने के बाद, समय-सारिणी बनी रहेगी और सेवा तेज़ व विश्वसनीय होगी। रेलवे सूत्रों के अनुसार, इस परियोजना के तहत रानाघाट से बनगांव तक कुल नौ स्टेशनों का

आधुनिकीकरण किया जाएगा। माझेग्राम और गोपालनगर से सटे इलाकों में दो नए सीमित ऊंचाई वाले सबवे बनाए जाएंगे, ताकि यातायात निर्बाध रहे।रेलवे अधिकारियों के अनुसार, दूसरी लाइन बनने से यात्री ट्रेनों की संख्या तो बढ़ेगी ही, साथ ही मालगाड़ियों का संचालन भी आसान होगा। परिणामस्वरूप, सालाना लगभग 0.88 मिलियन टन अतिरिक्त माल की ढुलाई हो सकेगी, जिससे रेलवे की वार्षिक आय में कई करोड़ रुपए की वृद्धि हो सकती है। स्थानीय व्यापारिक हलकों के अनुसार, यदि रानाघाट और बनगांव के बीच सीधी संचार व्यवस्था बेहतर हो जाती है, तो दोनों जिलों के बीच व्यापार में तेज़ी आएगी।

माल ढुलाई में लगने वाला समय कम होगा। परिणामस्वरूप, यह परियोजना छोटे और मध्यम व्यापारियों के लिए भी लाभदायक होगी। दैनिक यात्रियों का दावा है कि दूसरी लाइन के निर्माण से ट्रेनों की देरी कम होगी। इसके अलावा, संचार अधिक आरामदायक और तेज़ होगा।

हालांकि, खुशी के साथ-साथ चिंता भी है। यात्रियों और स्थानीय संगठनों का दावा है कि आवंटन की घोषणा के बाद भी निविदाओं और मंज़ूरियों में जटिलताओं के कारण पहले भी कई रेलवे परियोजनाएं रुकी हुई हैं। इसलिए इस बार ऐसा न हो। पूर्व रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी दीप्तिमय दत्ता आशावादी हैं। उन्होंने कहा कि इस परियोजना के लिए पर्याप्त धनराशि आवंटित की गई है। रानाघाट-बनगांव खंड में दोहरी लाइन सहित आधुनिक बुनियादी ढांचे के विकास का काम जल्द ही शुरू होगा। धनराशि आ गई है, इसलिए उम्मीद है कि जल्द ही काम शुरू हो सकेगा।

बाढ़ प्रभावित छात्रों को मिलेगा निःशुल्क डुप्लीकेट प्रमाणपत्र

निज संवाददाता : पश्चिम बंगाल में हाल ही में आई बाढ़ और भूस्खलन से हजारों लोग प्रभावित हुए हैं। कई छात्रों के महत्वपूर्ण स्कूल और कॉलेज के दस्तावेज भी नष्ट या खो गए हैं। इन छात्रों की मदद के लिए पश्चिम बंगाल उच्च माध्यमिक शिक्षा परिषद ने निर्णय लिया है कि प्रभावित छात्रों को उनके खोए हुए दस्तावेज की डुप्लीकेट प्रमाणपत्र निः शुल्क दी जाएगी। इसमें पंजीकरण प्रमाणपत्र, प्रवेश पत्र, अंकपत्र और उत्तीर्ण प्रमाणपत्र सभी शामिल हैं। बाढ़ प्रभावित छात्र अपने खोए हुए प्रमाणपत्रों

संस्थान के प्रमुख के माध्यम से करना होगा आवेदन

की डुप्लीकेट प्रति पाने के लिए संबंधित संस्थान के प्रमुख (एचओआई) के माध्यम से आवेदन करना होगा।

इन दस्तावेजों की डुप्लीकेट प्रति निःशुल्क मिल सकती है :
- रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट
- एडमिट कार्ड
- मार्कशीट
- पास सर्टिफिकेट

उम्मीदवार को अपने आवेदन के साथ यह बताना होगा कि उनके कागजात हाल ही में आई बाढ़ में खो गए थे। बाढ़ प्रभावित छात्रों को निम्नलिखित दस्तावेजों की डुप्लीकेट प्रति निःशुल्क मिल सकती है: रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट, एडमिट कार्ड, मार्कशीट, पास सर्टिफिकेट संबंधित संस्थान के प्रमुख (एचओआई) को उम्मीदवार के आवेदन का समर्थन करते हुए एक प्रमाण पत्र देना होगा। इस प्रमाण पत्र में यह स्पष्ट किया जाएगा कि उम्मीदवार ने बाढ़ के कारण अपने प्रमाणपत्र खो दिए हैं। परिषद ने स्पष्ट किया है कि, यह निर्णय पूरी तरह से मानवीय आधार पर लिया गया है और केवल बाढ़ प्रभावित छात्रों के हित में है। इसे किसी मिसाल के तौर पर नहीं देखा जा सकता।

एसएससी के नतीजे इसी महीने जारी होने की संभावना

निज संवाददाता : नौ साल के लंबे इंतजार के बाद नौकरी चाहने वालों को फिर से उम्मीद की किरण दिखाई दे रही है। कई विवादों, अदालती फैसलों और प्रशासनिक झटकों के बाद, स्कूल सेवा आयोग (एसएससी) आखिरकार एक नई भर्ती प्रक्रिया की ओर बढ़ रहा है। बहुप्रतीक्षित परीक्षा के नतीजे इस महीने के अंत तक जारी हो सकते हैं।

एसएससी सूत्रों ने यह संकेत दिया है।मालूम हो कि 2016 की भर्ती में भ्रष्टाचार और अनियमितताओं के आरोपों ने राज्य के शिक्षा विभाग को हिलाकर रख दिया था। सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर उस भर्ती पैनल को रद्द कर दिया गया था। लगभग 26,000 शिक्षकों और शिक्षाकर्मियों की नौकरी चली गई थी। फिर अदालत की निगरानी में परीक्षा फिर से शुरू हुई। पिछले महीने दोबारा परीक्षा हुई थी। लाखों नौकरी चाहने वाले इस परीक्षा में शामिल हुए थे। न केवल 2016 के उम्मीदवारों, बल्कि नए उम्मीदवारों को भी मौका मिला। आयु में व्यापक छूट के कारण

आवेदनों की संख्या रिकॉर्ड थी। एसएससी के एक अधिकारी के अनुसार, जल्द से जल्द परिणाम जारी करने की तैयारी चल रही है। सब कुछ ठीक रहा तो अक्टूबर के आखिरी हफ्ते में नतीजे घोषित कर दिए जाएंगे। नतीजे जारी होने के बाद नवंबर में इंटरव्यू की प्रक्रिया शुरू होगी। योजना के मुताबिक, दिसंबर के तीसरे हफ्ते तक भर्ती पूरी कर ली जाएगी। क्योंकि सुप्रीम कोर्ट के स्पष्ट आदेश के मुताबिक, पूरी प्रक्रिया 31 दिसंबर तक पूरी करनी है। एसएससी सूत्रों के मुताबिक, इस बार पूरी प्रक्रिया को पूरी तरह पारदर्शी और डिजिटल रखा जा रहा है। प्रश्नपत्र और उत्तर पुस्तिका की कार्बन कॉपी सीधे उम्मीदवारों को सौंप दी गई है। परीक्षा के बाद भी प्रश्न और उत्तर वेबसाइट पर अपलोड कर दिए गए हैं ताकि कोई किसी तरह की गड़बड़ी की शिकायत न कर सके।शिक्षा मंत्री ब्रात्य बसु ने कहा कि बंगाल में पहली बार इतनी पारदर्शी परीक्षा आयोजित की गई है कि नतीजे उम्मीदवारों के सामने स्पष्ट हैं। किसी अन्य राज्य में ऐसी कोई मिसाल नहीं है। हालांकि, अब इंटरव्यू को लेकर आशंकाएं हैं। कई उम्मीदवारों का कहना है कि पिछली घटना के बाद अभी तक उनका आत्मविश्वास पूरी तरह से नहीं लौटा है। वे चाहते हैं कि इंटरव्यू प्रक्रिया सार्वजनिक रूप से पारदर्शी हो। हालांकि, शिक्षा मंत्री ने इस आशंका को हास्यास्पद बताते हुए खारिज कर दिया और कहा कि सरकार चाहती है कि जो लोग पात्र हैं उन्हें उनकी सही नौकरियां वापस मिलें।

एमसीसीआई की पहली महिला अध्यक्ष

निज संवाददाता : प्रीति ए. सुरेका वर्ष 2025-26 के लिए मर्चेंट्स चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (एमसीसीआई) की अध्यक्ष चुनी गई हैं। चैंबर के 124 साल के इतिहास में इस प्रतिष्ठित पद को धारण करने वाली वे पहली महिला हैं। उनकी नियुक्ति बीते 19 सितंबर को आयोजित वार्षिक आम बैठक (एजीएम) में औपचारिक रूप से की गई। सुरेका वर्तमान में इमामी लिमिटेड की कार्यकारी निदेशक के रूप में कार्यरत हैं और हार्वर्ड बिजनेस स्कूल से स्नातक हैं। उनका नेतृत्व एमसीसीआई के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जो प्रगतिशील मूल्यों और समावेशी प्रतिनिधित्व के प्रति चैंबर की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह जानकारी एमसीसीआई की तरफ से जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में दी गई।

कोलाघाट पूजा मंडप से क्षय रोगियों को पौष्टिक आहार वितरित

प्रीति सिंह

संकेत एवं छात्र संघ द्वारा कोलाघाट में आयोजित दुर्गोत्सव के प्रांगण से पूरे कोलाघाट प्रखंड में सरकारी उपचार प्राप्त क्षय रोगियों को एक माह का पौष्टिक आहार वितरित किया गया। जिला स्वास्थ्य विभाग ने इस संकेत क्लब के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं जिसके तहत संस्था की पहल पर इस वर्ष पूजा माह से अगले वर्ष पूजा माह तक पूर्वी मेदिनीपुर जिले के विभिन्न प्रखंडों में सरकारी उपचार प्राप्त क्षय रोगियों को पौष्टिक आहार वितरित किया जाएगा। जिला परिवहन अधिकारी डॉ. शुभ्रता बाग ने बताया कि यह ''राष्ट्रीय निक्षय मित्र'' कार्यक्रम का एक हिस्सा है। इस अवसर पर जिला मुख्य स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. बिवास रॉय, कोलाघाट प्रखंड विकास अधिकारी अर्घ्य घोष, प्रखंड स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सांबा भौमिक, पंचायत समिति अध्यक्ष सुरजीत मन्ना और अन्य लोग उपस्थित थे। पूजा समिति के सदस्यों में से एक, डॉ. श्यामल अदक ने कहा-हमने इन

खाद्य पदार्थों में सरसों का तेल, मसूर की दाल, छोले, सोयाबीन, सूजी, खजूर आदि शामिल किए हैं। हमने इस कार्यक्रम को उस बहुआयामी कार्यक्रम के हिस्से के रूप में लिया है जिसे हम संस्था की पहल के तहत ज़रूरतमंद लोगों की सेवा के लिए पूरे वर्ष लागू करने का प्रयास करते हैं। पूजा से जुड़ी हर बात को ध्यान में रखते हुए, हम इस वर्ष से अगले वर्ष के पूजा माह तक जिला स्वास्थ्य विभाग की सूची और सलाह के अनुसार इस पौष्टिक भोजन को वितरित करने का प्रयास करेंगे। जिला स्वास्थ्य विभाग के मुख्य अधिकारी डॉ. बिभास भौमिक ने इस पहल की बहुत प्रशंसा की और कहा, यह बहुत अच्छा होगा यदि भविष्य में और भी संस्थाएं इस तरह की पहल करें। त्योहार के दौरान, इस परिसर में बाल विवाह रोकथाम, डेंगू रोकथाम, दहेज प्रथा, प्लास्टिक प्रदूषण रोकथाम, सड़क सुरक्षा, बैठक और चित्रकारी, पदयात्रा, सेमिनार, भाषण प्रतियोगिता और कला प्रदर्शनियों पर प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया है। इस वर्ष 53वें शरदोत्सव का उद्घाटन बृहन्नला समाज के प्रतिनिधियों और सरकारी महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा किया गया।

कोलकाता देश का सबसे सुरक्षित शहर

- एनसीआरबी की रिपोर्ट में लगातार चौथी बार जीता खिताब
- कोलकाता में अपराध दर देश के बाकी शहरों से कम

निज संवाददाता : कोलकाता ने एक बार फिर देश के सबसे सुरक्षित शहर का खिताब जीत लिया है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो की रिपोर्ट में कोलकाता ने यह खिताब जीता है। यह रिपोर्ट प्रति लाख लोगों पर अपराधों के लिहाज से तैयार की गई है। एनसीआरबी ने 2023 की रिपोर्ट जारी की है। उस रिपोर्ट में कहा गया है कि कोलकाता में अपराध दर देश के बाकी शहरों से कम है। कोलकाता में प्रति लाख लोगों पर 83.9 अपराध दर्ज किए गए हैं, जो 20 लाख से ज़्यादा आबादी वाले 19 शहरों में सबसे कम है। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि पुलिस ने तकनीक का इस्तेमाल किया है। इसके साथ ही कोलकाता ने लगातार चौथी बार सबसे सुरक्षित शहर का खिताब जीत लिया है। कोच्चि अब सबसे असुरक्षित शहरों की सूची में शीर्ष पर है। वहां प्रति लाख 3192.4 अपराध होते हैं। दिल्ली, जो पिछले वर्षों में शीर्ष पर थी, असुरक्षित शहरों की सूची में दूसरे स्थान पर है। 2023 के आंकड़ों के अनुसार, दिल्ली में प्रति लाख 2105.3 अपराध दर्ज किए गए। गुजरात का सूरत तीसरे स्थान पर है, जहां प्रति लाख 1377.1 अपराध दर्ज किए गए। कोलकाता सबसे सुरक्षित शहरों की सूची में सबसे ऊपर है। हैदराबाद देश का दूसरा सबसे सुरक्षित शहर है। यहां प्रति लाख 332.3 अपराध दर्ज किए गए। पुणे 337.1 अपराधों के साथ तीसरे स्थान पर है। मुंबई में प्रति लाख 355.4 अपराध दर्ज किए गए। 2023 के आंकड़ों के अनुसार, इन 19 शहरों में औसत अपराध दर

828 है। कोलकाता चौथी बार सबसे सुरक्षित शहर बनकर उभरा है। एनसीआरबी की रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि 2023 में अपराध दर पिछले दो वर्षों की तुलना में कम है। 2022 में, कोलकाता में अपराध दर 86.5 प्रति लाख थी। 2021 में, अपराध दर 103.5 थी। एनसीआरबी की रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया है कि 2016 से कोलकाता में अपराध दर में गिरावट का रुख है। 2016 में प्रति लाख 159.6 अपराध दर्ज किए गए थे। जिन शहरों में हाल ही में महिलाओं के साथ बलात्कार और हत्या जैसी घटनाएं हुई हैं, एनसीआरबी की 2023 की रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया है कि महिलाओं के खिलाफ अपराधों में भी कमी आई है। 2023 में कोलकाता में महिलाओं के खिलाफ कुल 1746 अपराध दर्ज किए गए। 2022 में 1890 अपराध दर्ज किए गए। 2021 में 1783 शिकायतें दर्ज की गईं। 2023 में प्रति लाख 25.7 अपराध दर्ज किए गए, जो देश में तीसरी सबसे कम दर है। चेन्नई में प्रति लाख 22.7 अपराध दर्ज किए गए। एनसीआरबी की रिपोर्ट के अनुसार, 2023 में कोलकाता में केवल 10 बलात्कार के मामले दर्ज किए गए। 2021 और 2022 में यह संख्या 11 थी। हालांकि, कोलकाता में नाबालिगों पर अत्याचार और बलात्कार की संख्या कहीं अधिक है। 2023 में, कोलकाता में नाबालिगों से बलात्कार की 172 शिकायतें दर्ज की गईं। 19 शहरों में कोलकाता की रैंकिंग 10वीं है। 2023 में कोलकाता में नाबालिगों के खिलाफ यौन उत्पीड़न की 39 शिकायतें दर्ज की गईं। इस मुद्दे पर राज्य की महिला एवं बाल कल्याण मंत्री शशि पांजा ने कहा-एनसीआरबी के आंकड़ों ने हमारे इस दावे को सही साबित कर दिया है कि कोलकाता एक सुरक्षित शहर है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बार-बार कहा है कि अपराध के मामले में जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई जाएगी।

हल करो हीरो बनो का उत्तर
1.22अप्रैल, 2.शतरंज, 3.बृहस्पति, 4. सांची, 5.वेटिकन सिटी 6.कछुआ

शरद पूर्णिमा पर श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति एवं सोसायटी बेनिफिट सर्कल द्वारा सेवा कार्यक्रमों का सफल आयोजन

निःशुल्क अल्पाहार वितरण और चिकित्सा शिविर में सैकड़ों लोगों ने लिया लाभ

निज संवाददाता : शरद पूर्णिमा के अवसर पर श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति एवं सोसायटी बेनिफिट सर्कल द्वारा दो अलग-अलग सेवा कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिनमें सैकड़ों श्रद्धालु एवं ग्रामीणों ने लाभ प्राप्त किया। श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति द्वारा हमीरागाछी विश्राम गृह परिसर में निःशुल्क अल्पाहार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। समिति द्वारा प्रत्येक माह पूर्णिमा के अवसर पर निःशुल्क खिचड़ी सेवा का आयोजन किया जाता है।इस विशेष अवसर पर समिति के अध्यक्ष विवेक गुप्ता के निर्देशन में सचिव बिमल दीवान, सह सचिव पवन बंसल, सुभाष सांवलदावाला एवं मार्गदर्शक राज कुमार बोथरा की देखरेख में यह सेवा संपन्न हुई। कार्यक्रम के दौरान गरमा-गरम

उपमा, पोहा, भुजिया, चनाचूर एवं मूंगदाल के पैकेट ताड़केश्वर जाने वाले कांवड़ियों एवं आसपास के जरूरतमंद ग्रामीणों में निःशुल्क वितरित किए गए।सह सचिव पवन बंसल ने बताया कि समिति भविष्य में इस सेवा कार्य को और अधिक व्यापक रूप देने के लिए संकल्पित है, ताकि अधिक से अधिक जरूरतमंद लोग इससे लाभान्वित हो सकें। इसी के साथ सोसायटी बेनिफिट सर्कल द्वारा, हमीरागाछी स्थित चिकित्सालय में निःशुल्क प्राथमिक चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया। यह पहल समाज के जरूरतमंद वर्गों तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने और लोगों में स्वास्थ्य-जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से की गई।मालूम हो कि प्रत्येक पूर्णिमा में शिविर आयोजित किया जाता है ताकि कांवड़ यात्रियों को सुविधा प्रदान की जाए। सेवा कार्य में मनीष धानुका, मनोज चौधरी एवं महेश काबरा की सक्रिय उपस्थिति एवं सहयोग सराहनीय रहा।

संपादकीय

बढ़ते वायु प्रदूषण के कारण भारत में घटते धूप के घंटे

सूर्य का प्रकाश एक अक्षय संसाधन प्रतीत हो सकता है। लेकिन बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान और भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा किए गए एक नए अध्ययन में अन्य के अलावा पाया गया है कि पिछले तीन दशकों में घने बादलों और बढ़ते एरोसोल प्रदूषण के कारण भारत भर में धूप के घंटे घट रहे हैं। पश्चिमी तट पर प्रति वर्ष धूप के घंटों में 8.6 घंटे की गिरावट देखी गई, जबकि उत्तरी मैदानों में प्रति वर्ष 13.1 घंटे की सबसे अधिक गिरावट दर्ज की गई। पूर्वी तट और डेक्कन पठार में भी क्रमशः 4.9 और 3.1 घंटे प्रति वर्ष की गिरावट का रुझान दिखाई दिया। इसका मतलब यह है कि भारत, दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा सौर ऊर्जा बाजार और मुख्यतः कृषि प्रधान समाज, सभी संभावनाओं में सौर कमी के युग में प्रवेश कर रहा है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली के शोधकर्ताओं का अनुमान है कि 2001 और 2018 के बीच वायु प्रदूषण ने भारत के उपयोग योग्य सौर विकिरण को लगभग 30 फीसद तक कम कर दिया है, जिसके लिए भारत की सौर ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अरबों डॉलर के अतिरिक्त निवेश की आवश्यकता होगी। फिर कृषि पर प्रभाव पड़ता है। पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में, जहां मंदता प्रबल है, किसान फसलों की धीमी वृद्धि और पत्तियों पर लंबे समय तक नमी की रिपोर्ट करते हैं-जो फंगल रोग और परिणामी फसल नुकसान का एक नुस्खा है।मानव मन और शरीर भी जोखिम में हैं। कम होती धूप हार्मोन के स्तर को बदल देती है, सतर्कता को कम करती है, और नींद के चक्र को बाधित करती है। भारत का एकल समय क्षेत्र प्रभाव को और बढ़ा देता है। मनोवैज्ञानिकों ने थकान, चिंता और मौसमी अवसाद की उच्च दरों का उल्लेख किया है जब सूर्य का प्रकाश एक निश्चित सीमा से नीचे चला जाता है। विटामिन डी की कमी-जो पहले से ही भारतीय शहरों में व्यापक है-सूर्य के प्रकाश की कमी के साथ बढ़ जाती है। वनस्पतियों और जीवों के लिए परिणाम समान रूप से चिंताजनक हैं। मंदता से लड़ने के लिए, भारत को पहले इसके कारण का पता लगाना होगा : गंदी हवा। इसका मतलब है कि एरोसोल प्रदूषण को सिर्फ़ स्वास्थ्य के लिए ख़तरा नहीं, बल्कि आर्थिक ख़तरा भी मानना होगा। राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम का लक्ष्य कण प्रदूषण को 20-30 फीसद तक कम करना है। इससे सालाना 6-16 टेरावाट-घंटे अतिरिक्त सौर ऊर्जा प्राप्त हो सकती है, जिसकी क़ीमत करोड़ों डॉलर होगी। चीन ने पर्यावरणीय मानदंडों का सख़्ती से पालन करके दशकों से चली आ रही सूर्य की रोशनी को मंद करने से हाल ही में उसे चमकाने के दौर में पहुँचाया है। भारत भी निकट आते अंधकार के ख़िलाफ़ इस युद्ध में जीत हासिल कर सकता है।

बिहार में शंकराचार्य का चुनावी शंखनाद

'गौ रक्षा' बनेगी सियासत का नया एजेंडा

इतना तय है कि शंकराचार्य का यह शंखनाद केवल एक धार्मिक आंदोलन नहीं बल्कि एक राजनीतिक प्रयोग भी है। यह प्रयोग सफल होगा या सीमित रह जाएगा, यह तो चुनावी नतीजे ही बताएंगे। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि इसने मुख्यधारा की पार्टियों को सोचने पर मजबूर कर दिया है और बिहार की चुनावी राजनीति को नई दिशा दी है। आने वाले महीनों में यह सवाल गूंजता रहेगा कि इस बार बिहार में गाय और गौ माता का मुद्दा कितनी दूर तक जाएगा और क्या यह राज्य की सत्ता का रास्ता बदल देगा।

अजय कुमार

बिहार की राजनीति में इस बार जातीय समीकरणों और विकास के वादों से अलग एक नया मुद्दा तेजी से उभरकर सामने आया है। ज्योतिष पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती ने शिवहर से अपनी चुनावी मुहिम की शुरुआत करते हुए स्पष्ट ऐलान किया है कि वे राज्य की सभी 243 विधानसभा सीटों पर गौ भक्त प्रत्याशी मैदान में उतारेंगे। उनका कहना है कि सनातन धर्म की रक्षा तभी संभव है जब गौ माता की रक्षा हो और यही इस चुनाव की असली कसौटी होगी। उनके इस एलान के बाद बिहार की चुनावी राजनीति में हलचल मच गई है और हर दल इस नए समीकरण को लेकर गणित बैठाने में जुट गया है।शंकराचार्य ने शिवहर प्रवास के दौरान संवाददाताओं से कहा कि जो गौ माता की रक्षा की बात करेगा वही उनका साथी है। उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह व्यक्ति किस धर्म या समुदाय से है। अगर असदुद्दीन ओवैसी जैसे नेता भी गौ माता को मां मानते हैं और उनकी रक्षा का संकल्प लेते हैं तो वे भी उनके सहयोगी हो सकते हैं। इस बयान ने पूरे राज्य में नई बहस छेड़ दी है क्योंकि यह पहली बार है जब किसी बड़े धार्मिक नेता ने सीधे तौर पर राजनीति में उतरकर एक ऐसा एजेंडा सामने रखा है जो पूरी तरह धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक भावनाओं पर आधारित है।शिवहर नगर परिषद ने हाल ही में गौ माता को नगर माता का दर्जा देने का प्रस्ताव पारित किया था। इस निर्णय ने शंकराचार्य की मुहिम को मजबूत आधार प्रदान किया। उन्होंने इस पहल को सराहते हुए कहा कि अब समय आ गया है कि देश के हर नगर और हर पंचायत इस तरह का निर्णय लें। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि वे स्वयं को गौ मतदाता घोषित करें और केवल उन्हीं उम्मीदवारों को वोट दें जो गौ रक्षा पर स्पष्ट और दृढ़ रुख रखते हों। उनकी यह अपील अब गांव-गांव में चर्चा का विषय बनी हुई है।बिहार के ग्रामीण इलाकों में धार्मिक भावनाएं हमेशा से गहरी जड़ें रखती हैं। खेती-किसानी करने वाला समाज गाय को केवल धार्मिक प्रतीक ही नहीं बल्कि अपनी आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन-रेखा मानता है। ऐसे में शंकराचार्य की यह मुहिम सीधे किसानों और ग्रामीण मतदाताओं के दिल तक पहुंच रही है। सीतामढ़ी के परौर गांव के किसान रघुनाथ ठाकुर कहते हैं कि पहले वोट देते समय जाति सबसे बड़ा आधार हुआ करती थी लेकिन अब शंकराचार्य जी ने हमें याद दिलाया है कि गाय हमारी असली पहचान है।विश्लेषकों का कहना है कि अगर यह मुहिम ज़मीनी स्तर पर असर दिखाती है तो कई सीटों पर नतीजे बदल सकते हैं। बिहार में विधानसभा चुनावों में पहले भी दो से तीन हज़ार वोटों का फर्क निर्णायक रहा है। 2020 के चुनाव में करीब 40 से अधिक सीटें बेहद मामूली अंतर से तय हुई थीं। ऐसे में अगर शंकराचार्य की मुहिम से 2 से 4 प्रतिशत वोट भी इधर-उधर होता है तो भाजपा समेत सभी दलों के लिए यह चुनौती बन सकता है।भाजपा के लिए यह स्थिति सबसे कठिन कही जा रही है। पार्टी वर्षों से हिंदुत्व और आस्था को लेकर राजनीति करती रही है। लेकिन शंकराचार्य ने सीधे तौर पर सवाल उठाया कि भाजपा ने अपने घोषणापत्र में अब तक गौ रक्षा को प्रमुख मुद्दा क्यों नहीं बनाया। उन्होंने कहा कि यदि भाजपा अब भी यह घोषणा कर दे कि वह गाय की रक्षा सुनिश्चित करेगी तो वे उनका समर्थन करेंगे, वरना जनता को यह मान लेना चाहिए कि भाजपा ने वादा निभाने में चूक की है। शंकराचार्य ने चेतावनी दी कि अगर भाजपा को नुकसान होगा तो वह उनकी करनी से होगा, न कि शंकराचार्य की तरफ से।राजद और जदयू के लिए भी यह स्थिति आसान नहीं है। दोनों दल जातिगत समीकरणों के आधार पर चुनाव जीतने की कोशिश करते हैं, लेकिन धार्मिक भावनाओं के केंद्र में आने से उनका वोट बैंक भी प्रभावित हो सकता है। कांग्रेस और वामदलों ने इस मुहिम को चुनावी राजनीति में धर्म को घसीटने की कोशिश बताया है, लेकिन ग्रामीण इलाकों में उनकी बातों का उतना असर नहीं दिख रहा।गौ मतदाता संकल्प यात्रा इस समय उत्तर बिहार के दर्जनों गांवों में पहुंच चुकी है। यात्रा में शामिल लोग ढोल-नगाड़ों और भजन-कीर्तन के साथ प्रवेश करते हैं और फिर शंकराचार्य या उनके प्रतिनिधि प्रवचन देते हैं। प्रवचन का केंद्र बिंदु यही रहता है कि गौ माता हमारी संस्कृति की आत्मा हैं और उन्हें राष्ट्र माता का दर्जा दिलाना हर भारतीय का कर्तव्य है। स्थानीय स्तर पर इस यात्रा का माहौल धार्मिक मेले जैसा हो रहा है और बड़ी संख्या में महिलाएं, किसान और युवा इसमें हिस्सा ले रहे हैं।लेकिन शंकराचार्य की इस मुहिम के सामने चुनौतियां भी कम नहीं हैं। सबसे बड़ी चुनौती संगठनात्मक है। 243 सीटों पर उम्मीदवार खड़ा करना केवल घोषणा करना भर नहीं है, इसके लिए स्थानीय स्तर पर मजबूत नेटवर्क और संसाधनों की ज़रूरत होगी। यह भी सवाल है कि क्या उनके उम्मीदवार जनता तक अपना संदेश पहुंचा पाएंगे और क्या लोग केवल गौ रक्षा के आधार पर अपना वोट तय करेंगे। बिहार के मतदाता आस्था और धर्म से प्रभावित जरूर होते हैं, लेकिन बेरोज़गारी, सड़क, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों को भी नज़रअंदाज़ नहीं करते। फिर भी यह तथ्य साफ है कि शंकराचार्य ने चुनावी विमर्श को नई दिशा दी है। अब तक बिहार की राजनीति जातीय गठजोड़ और विकास बनाम सामाजिक न्याय के मुद्दों के इर्द-गिर्द घूमती रही है। लेकिन अब गौ रक्षा और धार्मिक-सांस्कृतिक पहचान भी चर्चा के केंद्र में आ गई है। राजनीतिक दलों की चुप्पी बताती है कि वे इस नई लहर का इंतजार कर रहे हैं और देखना चाहते हैं कि जनता इस पर कैसे प्रतिक्रिया देती है। शिवहर, सीतामढ़ी, मधुबनी, चंपारण जैसे जिलों में जहां धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराएं गहरी हैं, वहां शंकराचार्य की अपील का असर सबसे पहले दिख सकता है। इन जिलों में पहले भी देखा गया है कि आस्था से जुड़े मुद्दों पर वोटिंग पैटर्न बदल जाता है। अगर यही स्थिति इस बार भी बनी तो चुनावी नतीजे अप्रत्याशित हो सकते हैं।फिलहाल इतना तय है कि शंकराचार्य का यह शंखनाद केवल एक धार्मिक आंदोलन नहीं बल्कि एक राजनीतिक प्रयोग भी है। यह प्रयोग सफल होगा या सीमित रह जाएगा, यह तो चुनावी नतीजे ही बताएंगे। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि इसने मुख्यधारा की पार्टियों को सोचने पर मजबूर कर दिया है और बिहार की चुनावी राजनीति को नई दिशा दी है। आने वाले महीनों में यह सवाल गूंजता रहेगा कि इस बार बिहार में गाय और गौ माता का मुद्दा कितनी दूर तक जाएगा और क्या यह राज्य की सत्ता का रास्ता बदल देगा।

जानें अपना राशिफल

मेष

इच्छापूर्ण समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं फायदा अवश्य होगा, किसी अन्य व्यक्ति से काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करे, मन में उत्साह रहेगा, शिव महिम्न का पाठ करे सफलता मिलेगी।

वृषभ

शान्तिपूर्ण समय हो सकता है इसलिए सिर्फ काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, कोई चमत्कारी काम बन सकता है, किसी पर भरोसा करके काम करने की आवश्यकता है, मन शान्त रखे।

मिथुन

हानिकारक समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं सोच समझकर ही करे, कोई परिवार के सदस्य से मतभेद भी हो सकता है सावधान रहे, बिना काम बाहर नहीं जाये घात हो सकता है।

कर्क

लेनदेन वाला समय हो सकता है इसलिए पूरी सावधानी से काम करने की आवश्यकता है, किसी के बहकावे में आने से नुकसान भी हो सकता है, अपनी चतुरता दिखाने की आवश्यकता है।

सिंह

प्रसिद्धि मिलने वाला समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं फायदा अवश्य होगा, कोई चमत्कारी काम बन सकता है, पूरी नैतिकता से काम करने की आवश्यकता है।

कन्या

सहमति भरा समय हो सकता है, किसी के साथ मिलकर काम करने पर विचार हो सकता है, कोई बहुत दिनों से रुका हुआ काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करे, आपसी सहमति बनाये रखे, मन प्रसन्न रहेगा।

तुला

समझदारी दिखाने वाला समय हो सकता है, कोई रुका हुआ मांगलिक कार्य पूरा हो सकता है, किसी अन्य व्यक्ति से काम करने पर चर्चा हो सकती है, जीवन-साथी पूरा साथ दे सकते है।

वृश्चिक

लापरवाही वाला समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं किसी से राय लेकर ही करे, कोई परिवार का सदस्य आपका समय खराब कर सकता है सावधान रहे, बिना काम बाहर नहीं जायें।

धनु

भावुकता वाला समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं सावधान रहकर ही करे, कोई परिवार का सदस्य आपका नुकसान भी कर सकता है, आपसी तालमेल बिगड़ सकता है।

मकर

ताकतवर समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं फायदा अवश्य होगा, कोई रुका हुआ जमीन का काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करे, परिवार के लोग पूरा साथ दे सकते हैं।

कुंभ

मेल-मिलाप वाला समय हो सकता है इसलिए सिर्फ काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, किसी पर भरोसा करके काम करने की आवश्यकता है, अपने परिवार को प्रसन्न रखे, मन में उत्साह रहेगा।

मीन

मनोरंजन वाला समय हो सकता है, कोई बहुत दिनों से रुका हुआ काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करे, किसी अन्य व्यक्ति से काम आगे बढ़ सकता है, जीवन-साथी पूरा साथ दे सकते हैं, मन प्रसन्न रहेगा।

सम्राट और बूढ़ा आदमी

जापान के एक सम्राट के पास बीस सुंदर फूलदानियों का एक दुर्लभ संग्रह था। सम्राट को अपने इस निराले संग्रह पर बड़ा अभिमान था। एक बार सम्राट के एक सरदार से अकस्मात एक फूलदानी टूट गई इससे सम्राट को बहुत गुस्सा आया उसने सरदार को फाँसी का आदेश दे दिया। पर एक बूढ़े व्यक्ति को इस बात का पता चला वह सम्राट के दरबार में हाजिर हुआ। और बोला, ''मै टूटी हुई फूलदानी जोड़ लेता हूँ मै उसे इस तरह जोड़ दूगाँ कि वह पहले जैसी दिखाई देगी।'' बूढ़े की बात सुनकर सम्राट बड़ा खुश हुआ। उसने बूढ़े को बची हुई फूलदानियो को दिखाते हुए कहा, ''ये

कुल उन्नीस फूलदानियाँ है। टूटी हुई फूलदानी इसी समूह की है। अगर तुमने टूटी हुई फूलदानी जोड़ दी तो मैं तुम्हे मुँह माँगा इनाम दूँगा।'' सम्राट की बात सुनते हुए बूढ़े ने लाठी उठाई और तड़ातड़ सभी फूलदानियाँ तोड़ दी। यह देखकर सम्राट गुस्से से आग बबूला हो गया। उसने चिल्लाकर कहा, ''बेवकूफ तूने यह क्या किया। बूढ़े आदमी ने सहजभाव से उत्तर दिया। महाराज मैंने अपना कर्तव्य निभाया है। इनमे से हर फूलदानी के पीछे एक आदमी की जान जानेवाली थी। मगर आप केवल एक आदमी की जान ले सकते हैं। सिर्फ मेरी!'' बूढ़े आदमी की चतुराई और हिम्मत देखकर सम्राट प्रसन्न हो गया। उसने बूढ़े आदमी और अपने सरदार दोनो को माफ कर दिया।

शिक्षा - बुराई से लड़ने के लिए एक ही साहसी व्यक्ति काफी होता है।

राजा और गड़रिया

प्राचीन काल में एक राजा था। उसे प्राकृतिक सौंदर्य के चित्र बनाने का बहुत शौक था। एक दिन चित्र बनाने के लिए वह पहाड़ की एक ऊँची चोटी पर गया। वहाँ उसने एक बहुत ही सुंदर चित्र बनाना शुरू किया। चित्र बन जाने पर वह उसके सामने खड़े होकर हर कोण से उसे निहारता और चित्र में जहाँ कोई कमी मालूम होती, उसे ब्रश से सुधार देता। अंत में दूर से चित्र कैसा दिखता है, यह जानने के लिए वह एक-एक कदम पीछे हटने लगा। पीछे हटते-हटते वह पहाड़ी के कगार तक जा पहुँचा। पास ही एक लड़का अपनी भेड़ें चरा रहा था। उसने पीछे हटते हुए राजा को देखा। उसने सोचा कि यदि राजा अब एक कदम भी पीछे हटेगा, तो वह गहरी घाटी में गिर पड़ेगा और मर जाएगा। यह सोचकर लड़का भागता हुआ चित्र के पास गया और अपनी लाठी से उसने चित्र को फाड़ डाला। राजा को लड़के की इस शरारत पर बहुत गुस्सा आया। उसने लपककर लड़के को दबोच लिया। राजा ने गुस्से से चीखते हुए कहा, ''मूर्ख! तूने यह क्या किया? मैं तुझे जिंदा नहीं छोड़ूँगा।''

भेड़े चरानेवाले लड़के ने बड़ी नम्रतापूर्वक कहा, ''महाराज, जरा पीछे मुड़कर देखिए! नीचे कितनी गहरी घाटी है! यदि मैंने यह चित्र न फाड़ा होता, तो आप इस घाटी में गिर जाते और आपकी जान न बचती।'' राजा ने पीछे मुड़कर देखा, तो अवाक रह गया। उसने अपनी जान बचाने के लिए लड़के को धन्यवाद दिया। राजा ने लड़के से कहा, ''सचमुच, यदि तुमने चतुराई से काम न लिया होता, तो मेरे प्राण नहीं बचते।'' फिर राजा लड़के को अपने साथ राजमहल ले गया। उसने लड़के को ढेर सारे पुरस्कार दिए। राजा ने अपनी देखरेख में उसकी परवरिश की और बड़े होने पर उसे अपना प्रधानमंत्री बनाया।

शिक्षा -अच्छाई का फल अच्छा ही होता है।

हल करो हीरो बनो

1. 'पृथ्वी दिवस' कब मनाया जाता है?
(क) 1 जनवरी (ख) 22 अप्रैल
(ग) 12 अगस्त (घ) 9 जनवरी
2. किस खेल को 'राजाओं का खेल' कहा जाता है?
(क) क्रिकेट (ख) शतरंज
(ग) फुटबॉल (घ) बैडमिंटन
3. ब्रह्मांड में सबसे बड़ा ग्रह कौन सा है?
(क) मंगल (ख) शनि
(ग) बृहस्पति (घ) पृथ्वी
4. विश्व की सबसे बड़ी बौद्ध स्तूप कहाँ स्थित है?
(क) सारनाथ (ख) बोधगया
(ग) सांची (घ) लुंबिनी
5. दुनिया का सबसे छोटा देश कौन सा है?
(क) मलेशिया (ख) मॉल्टा
(ग) वेटिकन सिटी (घ) लिकटेंस्टाइन
6. किस जीव का जीवनकाल सबसे लंबा होता है?
(क) कछुआ (ख) हाथी
(ग) तितली (घ) गिलहरी

(उत्तर इसी अंक में)

मार लो मुस्की

एक बार एक आदमी जंगल में जा रहा था तभी अचानक शेर आ गया, तो वो सांस रोककर जमीन में लेट गया, यह देखकर शेर उसके पास आया और कान में बोला, सावन है बेटा वरना सारी होशियारी निकाल देता।

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

शीला (सहेली मीना से) मेरे पति बहुत ही सीधे हैं।
मेरे अलावा किसी किसी की ओर आंखे उठाकर भी नहीं देखते हैं।
मीना- मेरे पति तेरे पति से चार कदम आगे हैं पराई औरत तो क्या, मेरी तरफ भी आंख उठाकर नहीं देखते।

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

एक मच्छर तूफान मे फंसा हुआ था, रास्ते मे एक पेड़ मिला मच्छर पेड़ से लिपट गया जब तूफान निकल गया तो मच्छर पसीना पोंछते '' हुए बोला- अगर आज मै नही होता तो ये पेड़ गिर ही जाता.!!

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

पोलीथीन बैग बेन होने की वजह से दूध लेने लोटा ले के निकला, तो ''स्वच्छ भारत अभियान'' वाले पकड़ कर ले गए, बहुत परेशानी है, भाई ।

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

पप्पू- आपकी बीवी दिखाई नहीं दे रहीं हैं??
बॉस- नहीं मैं उसे पार्टी में नहीं लाता!
पप्पू- क्यूँ सर
बॉस- वो गाँव की हैं ना !!
पप्पू- ओहह, माफ़ करना
मुझे लगा केवल आपकी हैं !!
पप्पू अस्पताल में! !

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

लड़का: मैंने आज जो काम किया है, वो सुन कर तुम्हारा सीना गर्व से चौड़ा हो जायेगा।
लड़की: अब और नही.. पहले ही तूने 32 से 36 कर दिया है।

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

डॉक्टर मरीज से : अगर तुम मेरी दवा से ठीक हो गए तो मुझे क्या इनाम दोगे।
मरीज : साहब मैं तो बहुत गरीब आदमी हूँ, कब्र खोदता हूं आपकी फ्री में खोद दूगाँ।

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

एक ज़माना था
जब मोबाइल गिरता था,
तो बैटरी बाहर आ
जाती थी!
अब मोबाइल गिरता है,
तो कलेजा, फेफड़े, लिवर
किडनी सब बाहर आ जातें हैं।

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

चोर पकड़ने की मशीन बनी
USA में 1 दिन में 9 चोर
पकड़े गये।
चाइना में 30, जापान में 90,
पाकिस्तान में 100 और भारत
में 1 घंटे में मशीन ही चोरी हो
गयी।

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

एक बार संता जंगल से जा रहा था, उसे एक चुड़ैल ने रोका और बोली, ''हा हा हु हु मैं चुड़ैल हूँ।''
संता बोला, ''पता है तेरी एक बहन मेरी बीवी है।''

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

बीवी सुबह सुबह उठ कर सीधे मेकअप करने लगी, पति की आँख खुली।
पतिः पागल हो गई हो जो सुबह सुबह मेकअप कर रही हो?
पत्नीः चुप रहो, मैंने अपने फोन पर चेहरा देखकर खुलने वाला लॉक लगाया था, अब
फोन मुझे पहचान नहीं रहा है।

माथापच्ची-12

		2	8					5
	7			3			4	9
	6	8	4			3	1	
				5			9	
		3				2		
	9			2				
	5	1			2	4	7	
4	3			1			2	
6					3	5		

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक है, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी एवं खड़ी पंक्ति में एवं 3X3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते। उत्तर अगले अंक में

माथापच्ची 11 का हल

2	5	8	3	7	9	6	4	1
4	3	6	1	5	2	9	8	7
7	9	1	6	8	4	5	2	3
9	4	3	2	1	7	8	5	6
6	8	2	5	9	3	1	7	4
5	1	7	4	6	8	3	9	2
8	6	9	7	4	1	2	3	5
1	2	4	9	3	5	7	6	8
3	7	5	8	2	6	4	1	9

राज्य सरकार का बड़ा फैसला, अब बिना रजिस्ट्रेशन के नहीं चलेंगे टोटो

आसनसोल। बेतरतीब ढंग से बराज्य के शहरों और कसबों में चल रहे टोटो की संख्या को नियंत्रित करने के लिए राज्य परिवहन विभाग ने बड़ा कदम उठाया है। 30 नवंबर के बाद राज्य में वही टोटो सड़कों पर दिखेंगे जिनके पास टेंपरेरी टोटो एनरोलमेंट नंबर (टीटीईएन) होगा। शुक्रवार को एक प्रेस वार्ता में परिवहन मंत्री स्नेहाशीष चक्रवर्ती ने उक्त जानकारी दी। उनके साथ परिवहन सचिव डॉ सौमित्र मोहन एवं अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे। कसबा स्थित परिवहन विभाग दो में आयोजित प्रेसवार्ता में उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि 13 अक्टूबर को राज्य भर में एक साथ टोटो का पंजीकरण प्रक्रिया शुरू होगी. जो 30 नवंबर तक जारी रहेगी. इस दौरान टोटो मालिकों को पंजीकरण के लिए परिवहन विभाग के वेबवसाइट पर ऑनलाइन आवेदन करना होगा। श्री चक्रवर्ती ने बताया कि पंजीकरण शुल्क 1000 रुपया जमा करना होगा। पंजीकरण की अवधि के छह महीने बाद 100 रुपये प्रति माह, यानी 12 महीनों में 1200 रुपये चार्ज लगेगा। उन्होंने बतायाकि टीटीईएन वाले टोटो को बीमा कवर के दायरे में भी लाया जायेगा। सूत्रों के मुताबिक, सभी टोटो नंबर मिलने के बाद, परिवहन विभाग की योजना है कि जिन जिलों या शहरों में टोटो की संख्या ज्यादा होगी, वहा ऑड और ईवन नंबर के आधार पर हर दूसरे दिन सड़कों पर चलाया जाये. यानी अलग-अलग दिनों में अलग अलग टोटो चलेंगे. इस नियम को जनवरी 2026 से लागू करने की योजना है. हालांकि यह पूरा काम संबंधित नगर निगम और नगरपालिका और स्थानीय पुलिस थाने की निगरानी में होगा। जानकारी के अनुसार टीटीईएन पंजीकरण फिलहाल, अस्थायी नामांकन संख्या होगी. नंबर प्लेट पर एक क्यूआर कोड होगा. राज्य के सभी टोटो इसी अस्थायी नामांकन संख्या के साथ पंजीकरण के दायरे में आयेंगे. इनकी पूरी सूची संबंधित आरटीओ कार्यालय में होगी. वर्तमान में राज्य में कितने टोटो चल रहे रहे हैं, इसका आंकड़ा राज्य सरकार के पास नहीं है. मंत्री ने स्वीकार करते हैं कि टोटो की बेलगाम संख्या से यातायात जाम का कारण बन रही है और परेशानी का कारण बन रही है, फिर भी टोटो को बंद नहीं किया जा सकता. परिवहन विभाग इसे नियंत्रित कर के चलाने जा रहा है।

विधायिका अग्निमित्रा ने ईडी छापों को लेकर तृणमूल पर बोला तीखा हमला

आसनसोल: भाजपा विधायक और पार्टी की राज्य महासचिव अग्निमित्रा पॉल ने शुक्रवार को हाल ही में ईडी छापों, राज्य पहचान रजिस्टर (एसआईआर) से जुड़े विवाद और मुख्य चुनाव अधिकारी पर लगे आरोपों को लेकर तृणमूल कांग्रेस और मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर तीखा हमला बोला।मंत्री सुजीत बोस के आवास पर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के छापे का जिक्र करते हुए अग्निमित्रा ने कहा, जब ईडी तृणमूल के एक मंत्री के घर पर छापेमारी कर रही है, तो मुझे टिप्पणी करने की जरूरत नहीं लगती। ईडी एक स्वतंत्र एजेंसी है जो छापेमारी करने से पहले मेरी अनुमति नहीं लेती।इस घटनाक्रम को आश्चर्यजनक बताते हुए, उन्होंने आगे कहा, यह चौंकाने वाला है कि तृणमूल के एक मंत्री के घर पर ईडी के छापे पड़ रहे हैं। सुजीत बोस, ज्योतिर्मय मलिक, पार्थ चटर्जी और अभिषेक बनर्जी की 2011 से पहले की संपत्तियों को देखिए - और अब भी देखिए। पिछले चौदह सालों में उनकी संपत्ति इतनी तेजी से कैसे बढ़ी? जनता को यह जानने का हक है कि इतनी संपत्ति इकट्ठा करने के लिए वे किस तरह का धंधा या व्यापार करते हैं। उन्होंने बंगाल की जनता को लूटा है और करोड़ों की संपत्ति बनाई है। जो लोग इसका जवाब नहीं दे पाएँगे, उन्हें छापे का सामना करना पड़ेगा - चाहे वे शीर्ष नेता ही क्यों न हों।अग्निमित्रा ने तृणमूल नेतृत्व पर जनता को लूटकर और सत्ता का दुरुपयोग करके अकूत संपत्ति इकट्ठा करने₹ का आरोप लगाया और कहा कि वे जाँच एजेंसियों के सामने जवाबदेही से बच नहीं सकते।'ममता बनर्जी सिर्फ. धमकाना जानती हैं': एसआईआर पर टिप्पणी पर अग्निमित्रा मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने हाल ही में दावा किया था कि बंगाल में एसआईआर लागू करने से दंगे हो सकते हैं।

पत्नी की हत्या कर, पति ने थाने में किया आत्मसमर्पण

दुगार्पुर: पश्चिम बंगाल के दुगार्पुर में एक चौंकाने वाली घटना सामने आई है, जहाँ एक पति ने अपनी पत्नी की कथित तौर पर हत्या करने के बाद खुद थाने में जाकर आत्मसमर्पण कर दिया। आरोपी पति पेशे से ट्यूशन टीचर (गृहशिक्षक) है। पुलिस ने बाद में उसे गिरफ्तार कर लिया।यह सनसनीखेज और रोंगटे खड़े कर देने वाली घटना शुक्रवार शाम को दुगार्पुर के धोबी घाट इलाके में हुई, जिसके बाद पूरे क्षेत्र में हड़कंप मच गया।पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, गिरफ्तार किए गए आरोपी का नाम दुर्गा दास कर है, जो पेशे से गृहशिक्षक है। मृतका की पहचान उसकी पत्नी मुकुल कर के रूप में हुई है।धोबी घाट इलाके के स्थानीय निवासियों ने बताया कि मुकुल कर को हमेशा हँसमुख देखा जाता था। लेकिन शुक्रवार शाम होते ही इलाके का माहौल बदल गया। अचानक क्षेत्र में पुलिस पहुँची और भीड़ जमा हो गई। तभी पता चला कि दुर्गा दास कर ने अपनी पत्नी मुकुल कर की हत्या कर दी है और हत्या के बाद स्वयं थाने में जाकर आत्मसमर्पण कर दिया है।स्थानीय निवासियों का दावा है कि घर की मालकिन की हत्या किसी धारदार हथियार या कटारी से की गई है। आत्मसमर्पण की सूचना मिलते ही दुगार्पुर पुलिस मौके पर पहुँची और मृतका के शव को बरामद किया। शव को पोस्टमार्टम के लिए दुगार्पुर उप-मंडल अस्पताल भेज दिया गया है।दुगार्पुर थाना पुलिस ने हत्या के कारणों का पता लगाने के लिए जाँच शुरू कर दी है और गिरफ्तार किए गए पति दुर्गा दास कर से इस संबंध में पूछताछ की जा रही है। पुलिस यह जानने की कोशिश कर रही है कि इस हत्याकांड के पीछे की वजह क्या है।

बाहरी तत्वों का स्कूल-चर्च पर कब्जा करने की साजिश ?

आसनसोल: आसनसोल स्थित एजी चर्च स्कूलों के प्रबंधन को लेकर चल रहे विवादों के बीच, द एसेंबली ऑफ गॉड चर्च स्कूल की प्राचार्या जेसिका स्पेंसर ने शनिवार शाम एक बड़ा बयान दिया। बैठक के बाद पत्रकारों से बात करते हुए, उन्होंने कहा कि कुछ बाहरी तत्व स्कूल और चर्च को कब्जा कर प्रभावित करने की कोशिश कर रहे हैं, जबकि उस संस्था का स्कूलों पर कोई अधिकार नहीं है। प्राचार्या स्पेंसर ने स्पष्ट किया कि संबंधित संस्था का कार्य केवल धार्मिक सलाह देना है। उन्होंने कहा, लेकिन वह लोग गलत तरीके से कुछ लोगों की मिलीभगत से साजिश कर रहे हैं। जबकि ऐसा करने का उनका कोई अधिकार नहीं है।ह्व उन्होंने समाज में गलत तरह के संदेश से भ्रम फैलाने का आरोप भी लगाया। प्राचार्या ने जोर देकर कहा कि स्कूल का संचालन पूरी तरह से एक पंजीकृत सोसाइटी के अधीन है, जो कि एक स्वायत्त संस्था है और इसके अपने नियम-कानून हैं।उन्होंने बताया, स्कूल के कर्मचारियों एवं प्रबंधन अधिकारियों आदि का वेतन भुगतान सबकुछ सोसाइटी के माध्यम से होता है। उनके अनुसार, एजीएनआई केवल उन्हें धार्मिक सलाह दे सकता है, लेकिन अब देखा जा रहा है कि हमारे स्कूलों के संचालन को प्रभावित करने की कोशिश की जा रही है। सोसाइटी के अधीन आसनसोल, रानीगंज, उखड़ा, सोदपुर जैसे स्कूल आते हैं, जहाँ हजारों की संख्या में विद्यार्थी पढ़ाई करते हैं।प्राचार्या ने चिंता व्यक्त की कि अगर स्कूल में कोई गड़बड़ी पैदा होती है, तो उनका भविष्य प्रभावित हो सकता है। उन्होंने अपील की कि स्कूल के संचालन में किसी तरह की बाधा या गड़बड़ी नहीं की जानी चाहिए।इस संबंध में एजीएनआई पदाधिकारियों से संपर्क न हो पाने के कारण उनका पक्ष नहीं मिल सका है।

तृणमूल माध्यमिक शिक्षक समिति ने किया विजया सम्मेलन

आसनसोल : आसनसोल के राहा लेन इलाके में स्थित टीएमसी पार्टी कार्यालय में आज पश्चिम बंगाल तृणमूल माध्यमिक शिक्षक समिति की तरफ से विजया सम्मेलन का आयोजन किया गया । इस मौके पर यहां मंत्री मलय घटक पांडेश्वर के विधायक और टीएमसी जिला अध्यक्ष नरेंद्र नाथ चक्रवर्ती जमुरिया के विधायक हरे राम सिंह पश्चिम बर्दवान जिला परिषद सभाधिपति विश्वनाथ बावड़ी डिप्टी मेयर अभिजीत घटक एमएमआईसी गुरदास चटर्जी बोरो चेयरमैन अनिर्बन दास मुख्य रूप से उपस्थित थे वहीं कमेटी की तरफ से संगठन के अध्यक्ष गांधी प्रसाद नोनिया सेक्रेटरी राजीव मुखर्जी मुकेश झा के अलावा संगठन के तमाम शिक्षक उपस्थित थे। इस दौरान शिक्षक संगठन की तरफ से सभी विशिष्ट अतिथियों को सम्मानित किया गया कार्यक्रम के बारे में पत्रकारों को जानकारी देते हुए गांधी प्रसाद नोनिया ने कहा की मां दुर्गा की पूजा के उपरांत विजयादशमी होती है यह एक ऐसा दिन है जब बुराई पर अच्छाई की जीत होती है .

रानीगंज मास्टर प्लान को लेकर एक उच्च स्तरीय बैठक

आसनसोल : पश्चिम बर्धमान जिला मजिस्ट्रेट एस. पोन्नबलम की अध्यक्षता में सर्किट हाउस में रानीगंज मास्टर प्लान को लेकर एक उच्च स्तरीय बैठक आयोजित हुई। बैठक में कानून मंत्री मलय घटक, रानीगंज विधायक तापस बनर्जी, जमुरिया विधायक हरे राम सिंह, पांडेश्वर विधायक नरेंद्र नाथ चक्रवर्ती, आसनसोल-दुगार्पुर विकास प्राधिकरण (एडीडीए) के चेयरमैन कवि दत्ता सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।बैठक के बाद पत्रकारों से बातचीत में जिला मजिस्ट्रेट ने बताया कि रानीगंज के धसान प्रभावित इलाकों के निवासियों के पुनर्वास पर विस्तृत चर्चा हुई। उन्होंने कहा कि अंडाल क्षेत्र के दक्षिण खंड में 4,000 फ्लैट तैयार हैं। पुनर्वास के लिए नई नीति तैयार की गई है, जिसे उद्योग विभाग को अनुमोदन के लिए भेज दिया गया है। अनुमोदन मिलते ही कार्यवाही शुरू हो जाएगी। जमुरिया के तैयार फ्लैटों के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने स्पष्ट किया कि टेंडर प्रक्रिया पूरी न होने के कारण विलंब हो रहा था, लेकिन हाउसिंग विभाग से आज ही सूचना मिली है कि प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी है और पुनर्वास जल्द शुरू होगा। जमुरिया विधायक हरे राम सिंह ने भी कहा कि बैठक में धसान प्रभावितों के पुनर्वास पर जोर दिया गया। जो भूमि अधिग्रहण, फंडिंग एवं पुनर्वास पैकेज पर केंद्रित रहेगी।

दुर्गापुर दुष्कर्म कांड में पुलिस की बड़ी कार्रवाई, 3 हिरासत में

दुर्गापुर। दुर्गापुर में एक मेडिकल छात्रा के साथ हुए सनसनीखेज दुष्कर्म कांड में पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए तीन लोगों को हिरासत में लिया है। सूत्रों के अनुसार, इन व्यक्तियों से लगातार पूछताछ की जा रही है।जांच में ड्रोन और फॉरेंसिक टीम घटना की निष्पक्ष और गहन जांच सुनिश्चित करने के लिए पुलिस किसी भी तरह की कोताही नहीं बरत रही है।पुलिस सूत्रों के मुताबिक, ड्रोन कैमरे की मदद से पूरे घटनास्थल और आसपास के इलाकों की बारीकी से जांच की जा रही है ताकि कोई भी सुराग छूट न जाए। इसके साथ ही, फॉरेंसिक टीम ने भी मौके पर पहुंचकर आवश्यक नमूने और सबूत जुटाए हैं। पुलिस ने आश्वासन दिया है कि जरूरत पड़ने पर कुछ अन्य व्यक्तियों को भी पूछताछ के लिए बुलाया जा सकता है और दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा।सियासी दबाव और पीड़िता की स्थितिइस घिनौनी वारदात ने राज्य की राजनीति को गरमा दिया है। प्रशासनिक जांच के साथ-साथ राजनीतिक गलियारों में भी तनाव और चर्चा का माहौल है। विपक्ष इस मुद्दे को लेकर सत्तारूढ़ दल पर हमलावर है।इस बीच, डॉक्टर सूत्रों से खबर मिली है कि पीड़िता फिलहाल स्वस्थ है और उसका इलाज चल रहा है।

टीएमसी नेताओं ने साढ़े 14 साल में अवैध तरीके से संपत्ति बनाई : अग्निमित्रा पाल

आसनसोल : आसनसोल दक्षिण की विधायक अग्निमित्रा पाल पिछले 1 महीने से भी ज्यादा समय से बीमार चल रही थी आज वह फिर अपने कार्यकताओं के बीच पहुंची अपने विधायक को अपने बीच पाकर कार्यकताओं का जोश देखने लायक था उन्होंने विधायक के समर्थन में नारे लगाए रानीगंज के रानी साएर मोड़ इलाके में विधायक का भव्य स्वागत किया गया इसके उपरांत भाजपा समर्थकों ने एक बाइक रैली में निकली जो काली पहाड़ी जुबली होते हुए बर्नपुर के बारी मैदान काली मंदिर पहुंची। यहां पर विधायक ने काली मंदिर में पूजा अर्चना की इसके बाद बर्नपुर के विधायक कार्यालय में वह पत्रकारों से रूबरू हुई उन्होंने पत्रकारों के कई सवालों के जवाब दिए विधायक ने कहा कि पिछले 1 महीने से वह बीमार चल रही थी लेकिन आज फिर से अपने समर्थकों के बीच जाकर वह बहुत खुश हैं और समर्थकों ने उनका जिस तरह से स्वागत किया इसे देखकर उनकी आंखें नम हो गई । वही आज फिर टीएमसी के कुछ नेताओं के घर पर एनफोर्समेंट डायरेक्टरेट द्वारा छापा मारने के मुद्दे पर पूछे गए सवाल के जवाब में अग्निमित्रा पाल ने कहा कि टीएमसी के नेताओं ने अपने साढ़े 14 साल के कार्यकाल के दौरान अवैध तरीके से संपत्ति बनाई है इसका जवाब उनका जांच एजेंसी को देना होगा इसका जवाब उन्हें बंगाल की जनता को देना होगा इसलिए वह इस विषय पर कुछ नहीं कहना चाहते लेकिन अगर कहीं पर कुछ गलत हुआ है तो जांच एजेंसी इसकी जांच जरुर करेगी

ईसीएल ने सशक्तिकरण और शिक्षा पर केंद्रित अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया

आसनसोल: ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (ईसीएल) ने सार्वजनिक क्षेत्र में महिलाएँ (डब्ल्यू आईपीएस) के बैनर तले पहली बार अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाकर एक मील का पत्थर स्थापित किया। 10 से 11 अक्टूबर तक आयोजित इस दो दिवसीय समारोह का विषय था उसे सशक्त बनाएँ, उसे शिक्षित करें, उसका उत्सव मनाएँ₹, जो लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण के प्रति ईसीएल की प्रतिबद्धता को दशार्ता है।उद्घाटन समारोह में ईसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री सतीश झा, निदेशक (वित्त) मोहम्मद अंजार आलम और निदेशक (तकनीकी/योजना एवं परियोजना) श्री गिरीश गोपीनाथन नायर भी उपस्थित थे। उनकी उपस्थिति ने समावेशिता, शिक्षा और समग्र विकास को बढ़ावा देने वाली पहलों के प्रति संगठन की अटूट प्रतिबद्धता को दशार्या।आस-पास के स्कूलों की लगभग 50 से 60 छात्राओं ने कार्यक्रम में भाग लिया, जिसमें विभिन्न इंटरैक्टिव और शैक्षिक गतिविधियाँ शामिल थीं। इस दिन का एक प्रमुख आकर्षण स्वास्थ्य एवं स्वच्छता पर एक जागरूकता सत्र था, जिसमें स्त्री रोग संबंधी कैंसर, मासिक धर्म स्वच्छता और पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम (पीसीओएस) जैसे विषयों पर ध्यान केंद्रित किया गया - जिसका उद्देश्य युवा लड़कियों में स्वास्थ्य साक्षरता और आत्मविश्वास बढ़ाना था। इस अवसर पर बोलते हुए, वरिष्ठ अधिकारियों ने लड़कियों के लिए सीखने, नेतृत्व करने और अपनी पूरी क्षमता हासिल करने के अवसर पैदा करने के महत्व पर जोर दिया। इस कार्यक्रम में ईसीएल द्वारा अपनी सामाजिक पहुँच को मजबूत करने और अपने समुदायों में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए किए जा रहे प्रयासों पर प्रकाश डाला गया।

दुर्गापुर में मेडिकल छात्रा के साथ सामूहिक बलात्कार के विरोध में भाजपा का विरोध प्रदर्शन

आसनसोल: दुगार्पुर के एक निजी मेडिकल कॉलेज की एमबीबीएस द्वितीय वर्ष की छात्रा के साथ कथित सामूहिक बलात्कार के विरोध में भाजपा विधायक अग्निमित्रा पॉल के नेतृत्व में भाजपा समर्थकों और कार्यकताओं द्वारा त्रिवेणी मोड़ पर शनिवार को बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन के दौरान बर्नपुर में तनाव फैल गया।प्रदर्शनकारियों ने सड़क जाम कर दी और टायर जला दिए, जिससे लगभग एक घंटे तक यातायात बाधित रहा। कई महिलाओं सहित बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता इस प्रदर्शन में शामिल हुए और आरोपियों की तत्काल गिरफ्तारी और राज्य सरकार से कड़ी कार्रवाई की मांग की।विधायक अग्निमित्रा पॉल ने कहा, ओडिशा की एक युवती जो एमबीबीएस की पढ़ाई करने दुगार्पुर आई थी, उसके साथ सामूहिक बलात्कार किया गया है। वह कल रात खाना खरीदने के लिए बाहर गई थी जब यह घटना घटी। बंगाल में यह पहला ऐसा मामला नहीं है - ऐसी घटनाएं पहले भी हो चुकी हैं।पॉल ने मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, जिनके पास गृह विभाग भी है, की तीखी आलोचना की और उन पर दोषियों को बचाने का आरोप लगाया। उन्होंने आरोप लगाया, मुख्यमंत्री सख्त कार्रवाई नहीं करतीं। आरोपियों पर हल्की धाराओं में मामला दर्ज किया जाता है और उन्हें जल्द ही राहत मिल जाती है।महिलाओं की सुरक्षा पर चिंता व्यक्त करते हुए, पॉल ने कहा, ₹पश्चिम बंगाल में महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं। हम ओडिशा से बंगाल में पढ़ाई करने आई एक लड़की की सुरक्षा नहीं कर सके। त्योहारों और समारोहों पर करोड़ों खर्च किए जाते हैं, लेकिन असली देवी - हमारी महिलाएं - यहाँ असुरक्षित रहती हैं।किसी भी अप्रिय घटना को रोकने के लिए धरना स्थल पर पुलिस तैनात की गई थी। आंदोलन समाप्त होने के बाद यातायात बहाल हो गया।

ऑपरेशन यात्री सुरक्षा के तहत चोरी किए गए मोबाइल की बरामदगी

आसनसोल। जसीडीह रेलवे स्टेशन पर चलाए जा रहे ऑपरेशन यात्री सुरक्षा के दौरान, एक यात्री ने प्लेटफॉर्म नंबर 4 पर प्रतीक्षा करते समय अपने मोबाइल के चोरी होने की सूचना दी। आरपीएफ और जीआरपी कर्मियों ने तुरंत कार्रवाई करते हुए आरोपी को जनरल वेटिंग हॉल के सामने कार पार्किंग क्षेत्र में पकड़ लिया।चोरी किया गया मोबाइल बरामद कर यात्री को वापस कर दिया गया। आरोपी को आगे की कानूनी कार्रवाई के लिए हिरासत में लिया गया। शिकायत के आधार पर संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया।इस त्वरित कार्रवाई से आसनसोल मंडल में यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए ऑपरेशन यात्री सुरक्षा के तहत की जा रही सक्रिय पहल और सतत प्रयास प्रदर्शित होते हैं। यात्रियों से अनुरोध है कि वे सतर्क रहें और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना रेलवे अधिकारियों को दें।

भाजपा का थाना घेराव, जीटी रोड जाम कर जताया विरोध

आसनसोलः दुगार्पुर में मेडिकल छात्रा के साथ हुए जघन्य दुष्कर्म की घटना के विरोध में रविवार को आसनसोल में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। पार्टी कार्यकताओं ने कानून व्यवस्था की बदहाली का आरोप लगाते हुए आसनसोल दक्षिण थाना का घेराव किया और जीटी रोड को जाम कर दिया। भाजपा के स्थानीय नेता और बड़ी संख्या में कार्यकताओं ने हाथों में पोस्टर लेकर विरोध मार्च निकाला। प्रदर्शनकारियों ने पश्चिम बंगाल की कानून व्यवस्था, महिला सुरक्षा और पुलिस प्रशासन की निष्क्रियता के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। प्रदर्शन के दौरान कार्यकताओं ने ह्यजस्टिस फॉर मेडिकल स्टूडेंट और दोषियों को फाँसी दो जैसे नारे लगाए। इस दौरान भाजपा नेता कृष्णेन्दु मुखर्जी, शिव

प्रसाद बर्मन, ओम नारायण प्रसाद, प्रदीप सिंह, सौम्या दोलूई , सुदीप चौधरी आदि मौजूद थे। भाजपा समर्थकों ने आसनसोल के एक प्रमुख हिस्से में जीटी रोड को जाम कर दिया। सड़क जाम होने के कारण वाहनों की लंबी कतारें लग गईं, जिससे आम जनता को भारी असुविधा का सामना करना पड़ा। कार्यकताओं ने आसनसोल दक्षिण थाना का घेराव करते हुए पुलिस की कार्यशैली पर सवाल उठाए और जल्द से जल्द सभी दोषियों की गिरफ्तारी और उन्हें कड़ी सजा देने की मांग की। भाजपा नेताओं ने इस दौरान एक मांग पत्र भी पुलिस को सौंपा, जिसमें राज्य में महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने और ऐसी घटनाओं पर रोक लगाने के लिए ठोस कदम उठाने की मांग की गई। हालांकि, भाजपा ने चेतावनी दी है कि यदि दोषियों को तुरंत न्याय के कटघरे में नहीं लाया गया, तो उनका आंदोलन और तेज होगा।

दुर्गापुर नगर निगम का अस्थायी कर्मचारी गिरफ्तार

दुर्गापुरः दुगार्पुर में ओडिशा की एक मेडिकल छात्रा के साथ कथित सामूहिक दुष्कर्म के मामले में पुलिस ने अपनी कार्रवाई तेज कर दी है। इस मामले में एक और आरोपी को गिरफ्तार किया गया है, जिसके बाद गिरफ्तार किए गए आरोपियों की कुल संख्या चार हो गई है। सूत्रों के अनुसार, गिरफ्तार किया गया चौथा आरोपी दुगार्पुर नगर निगम का अस्थायी कर्मचारी है। उसे सोमवार को दुगार्पुर अनुमंडल न्यायालय में पेश किया जाएगा। पीड़िता के आरोप पत्र में पांच लोगों का नाम था, जिनमें से एक आरोपी अभी भी फरार है, जिसकी तलाश में पुलिस छापेमारी कर रही है।पुलिस ने गिरफ्तार किए गए सभी आरोपियों का डीएनए टेस्ट कराने की तैयारी कर ली है। इस बीच, पुलिस ने शिकायतकर्ता छात्रा के दोस्त-सहपाठी को अभी भी हिरासत में रखा हुआ है और उससे लगातार पूछताछ की जा रही है। पुलिस सूत्रों का कहना है कि सुरक्षा के मद्देनजर भी उसे हिरासत में रखा गया है। दुगार्पुर के एक निजी मेडिकल कॉलेज की द्वितीय वर्ष की छात्रा पीड़िता अभी भी अस्पताल में भर्ती है। ओडिशा से उसके माता-पिता भी दुगार्पुर पहुँच चुके हैं। घटना से दुखी पीड़िता के पिता ने रविवार को कहा कि वह पश्चिम बंगाल में सुरक्षित महसूस नहीं कर रहे हैं और अपनी बेटी को लेकर ओडिशा चले जाना चाहते हैं।इस घटना को लेकर राज्य में राजनीतिक बयानबाजी शुरू हो गई है। विपक्ष ने राज्य की कानून-व्यवस्था पर सवाल उठाए हैं। भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) ने दुगार्पुर में विरोध प्रदर्शन मंच तैयार किया है। नेता प्रतिपक्ष शुभेंदु अधिकारी सोमवार को धरने में शामिल होंगे और दोषियों को कड़ी सजा देने की मांग करेंगे। वह अस्पताल जाकर पीड़िता और उसके माता-पिता से भी मुलाकात करेंगे।तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के पश्चिम बर्धमान जिला अध्यक्ष और विधायक नरेंद्रनाथ चक्रवर्ती ने कहा कि जिले के दो मंत्री, मलय घटक और प्रदीप मजूमदार, पहले दिन से ही पुलिस के संपर्क में हैं और पुलिस ने समय पर कार्रवाई करते हुए आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

पश्चिम बंगाल महिला आयोग की सदस्य ने बलात्कार पीड़िता से की मुलाकात

दुर्गापुरः पश्चिम बंगाल महिला आयोग की सदस्य अर्चना मजूमदार ने दुगार्पुर के एक निजी मेडिकल कॉलेज के पास कथित तौर पर सामूहिक बलात्कार की शिकार हुई मेडिकल छात्रा से मुलाकात की। अस्पताल का दौरा करने और डॉक्टरों व पुलिस से बातचीत करने के बाद, मजूमदार ने मीडिया को छात्रा की स्थिति के बारे में जानकारी दी और महिलाओं की सुरक्षा और अस्पताल की लापरवाही पर गंभीर चिंता जताई।मजूमदार ने कहा कि पीड़िता गहरे सदमे में है। उन्होंने संवाददाताओं से कहा, वह शारीरिक रूप से कमजोर है, उसे बहुत ज्यादा खून बह रहा है और वह पूरी तरह सदमे में है। वह ठीक से बोल भी नहीं पा रही है। उन्होंने आगे कहा, लड़की ओडिशा के एक मध्यमवर्गीय परिवार से है और उच्च शिक्षा हासिल करने के लिए यहाँ आई थी। उसका पूरा भविष्य दांव पर है। उन्होंने पुष्टि की कि मेडिकल नमूने एकत्र कर फोरेंसिक जाँच के लिए पुलिस को सौंप दिए गए हैं। हालाँकि, मजूमदार ने घटना स्थल वाले इलाके से सीसीटीवी फुटेज न मिलने पर निराशा व्यक्त की।उन्होंने कहा, घटनास्थल पर कोई सीसीटीवी कैमरा नहीं था। यह अस्पताल और अधिकारियों की लापरवाही को दशार्ता है। अगर अस्पताल परिसर में पर्याप्त भोजन या दुकानें होतीं, तो लड़की शायद बाहर न जाती। उन्होंने आगे कहा, ₹महिलाओं की सुरक्षा एक गंभीर चिंता का विषय बन गई है - यह व्यवस्थित भ्रष्टाचार और लापरवाही के एक पैटर्न को दशार्ता है।पीड़िता के बयान का हवाला देते हुए, मजूमदार ने कहा कि लड़की अपनी एक सहेली के साथ खाना खाने गई थी, तभी अचानक तीन आदमी वहाँ पहुँचे, उसके साथ मारपीट की और उसका फोन छीन लिया। उन्होंने कहा, ₹बाद में, दो और लोग उनके साथ आ गए - उनमें से एक ने उसके साथ जबरदस्ती बलात्कार किया, जबकि दूसरे ने उसके साथ छेड़छाड़ की। उसके साथ आई सहेली उसे बेहोशी की हालत में वापस परिसर ले आई।मजूमदार ने बताया कि पीड़िता का फोन अभी भी गायब है और पुलिस जाँच कर रही है। उन्होंने आगे कहा, पुलिस को यह पता लगाना है कि उस दौरान उसकी सहेली कहाँ गई थी। मेरी ज़िम्मेदारी तथ्य इकट्ठा करना और आयोग के दिशानिर्देशों के अनुसार कार्रवाई सुनिश्चित करना है।₹दोस्त की भूमिका के बारे में पूछे जाने पर, मजूमदार ने कहा, जाहिर है कि वह शक के घेरे में है। लड़की शुरू में बाहर नहीं जाना चाहती थी, लेकिन उसने ज़िद की।

मंत्री मलय घटक ने 12 महिलाओं को प्रदान की सिलाई मशीन, 7 कन्याओं के विवाह के लिए दिए 51-51 हजार

आसनसोल : आसनसोल के एन एस रोड इलाके में गौशाला के निकट बरनवाल रिलीफ सोसायटी भवन में बरन कन्या उत्थान न्यास पटना की तरफ से सहायता राशि उपलब्ध कराई गई। वहीं कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित मंत्री मलय घटक द्वारा 12 महिलाओं को सिलाई मशीन प्रदान की गई।इस मौके पर बरनवाल रिलीफ सोसायटी के अध्यक्ष विजय कुमार बरनवाल सूरज बरनवाल कैलाश बरनवाल नीरज बरनवाल कोषाध्यक्ष भवानी बरनवाल के अलावा संगठन के अन्य सदस्य उपस्थित थे।इस बारे में बरनवाल रिलीफ सोसायटी के दयानंद बरनवाल ने कहा कि आज बरन कन्या उत्थान समिति पटना द्वारा बरनवाल रिलीफ सोसायटी भवन में एक कार्यक्रम का

आयोजन किया गया। इसके जरिए जरूरतमंद परिवारों की सात कन्याओं के विवाह के लिए 51000 करके दिए गए। वही 12 महिलाओं को स्वावलंबन के लिए सिलाई मशीन प्रदान किए गए उन्होंने बताया कि मंत्री मलय घटक ने अपने हाथों से इन सिलाई मशीनों को महिलाओं को सौपा। दयानंद बरनवाल ने कहा कि उनके संगठन का उद्देश्य हमेशा से यही रहता है कि समाज की जरूरतमंद वर्ग है उनकी मदद की जाए इसलिए आज सात ऐसी बेटियों के विवाह के लिए जिनके परिवार आर्थिक रूप से उतने सक्षम नहीं है वहीं 12 महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए सिलाई मशीन प्रदान किया गया है उन्होंने कहा कि भविष्य में भी इस तरह के प्रयास जारी रहेंगे ताकि समाज के वंचित वर्ग के लोगों का ज्यादा से ज्यादा सहयोग हो सके वहीं बरनवाल समाज के एक व्यक्ति को साइकिल भी दी गई यह व्यक्ति हाकरी करके अपनी जीवित अर्जित करते हैं।

मैथन आंदोलन के बाद डीवीसी पंचेत कार्यालय पर टीएमसी का घेराव

मंत्री घटक ने पानी छोड़ने से पहले राज्य को सूचित न करने पर आपराधिक कार्रवाई की चेतावनी दी

डीवीसी अधिकारी ने आंदोलन को राजनीति से प्रेरित बताया

आसनसोलः दामोदर घाटी निगम (डीवीसी) और पश्चिम बंगाल सरकार के बीच चल रहा गतिरोध शुक्रवार को और गहरा गया जब तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) समर्थकों ने झारखंड में डीवीसी पंचेत कार्यालय का घेराव किया। इससे पहले इसी सप्ताह मैथन में भी इसी तरह का विरोध प्रदर्शन हुआ था।राज्य के कानून और श्रम मंत्री मलय घटक के नेतृत्व में यह आंदोलन डीवीसी द्वारा पश्चिम बंगाल सरकार को पूर्व सूचना दिए बिना मैथन और पंचेत बांधों से पानी छोड़ने की कथित प्रथा के विरोध में आयोजित किया गया था। टीएमसी के अनुसार, इस घटना के कारण बर्धमान, हुगली और हावड़ा जिलों के कई निचले इलाकों में बाढ़ आ गई है।पश्चिम बर्धमान जिले के आसनसोल, पुरुलिया के रघुनाथपुर और आसपास के प्रखंडों से सैकड़ों टीएमसी कार्यकर्ता 100 से अधिक एसबीएसटीसी बसों में सवार होकर विरोध प्रदर्शन में शामिल हुए। प्रदर्शनकारियों ने डीवीसी पंचेत कार्यालय में एक विशाल प्रतिनिधिमंडल जमा किया, जिसमें डीवीसी प्रशासन के खिलाफ नारे लगाए गए और उस पर ₹लापरवाही और अहंकार का आरोप लगाया गया।भा को संबोधित करते हुए, मंत्री मोलॉय घटक ने डीवीसी अधिकारियों को कड़ी चेतावनी देते हुए कहाः अब से, डीवीसी को किसी भी बांध से पानी छोड़ने से कम से कम 24 घंटे पहले राज्य सरकार को सूचित करना होगा। अगर इस लापरवाही के कारण लोगों की जान-माल को नुकसान पहुँचता है, तो हम ज़िम्मेदार डीवीसी अधिकारियों के खिलाफ उचित कानूनी धाराओं के तहत आपराधिक कार्यवाही शुरू करेंगे।मंत्री ने आरोप लगाया कि डीवीसी की कार्रवाइयों ने कई जिलों में धान और सब्जियों की फसलों को नष्ट कर दिया है, मछुआरों की आजीविका को प्रभावित किया है और ग्रामीण परिवारों को भारी कठिनाई का सामना करना पड़ा है।उन्होंने पंचेत जलाशय पर सौर पैनल लगाने की डीवीसी की योजना की भी आलोचना की और दावा किया कि इससे स्थानीय मछुआरा समुदाय की आजीविका को खतरा है।हम कोलकाता, दुगार्पुर और फरक्का में भी यह आंदोलन जारी रखेंगे,₹ घटक ने घोषणा की। उन्होंने आगे कहा कि बांधों की तलहटी से गाद निकालने में विफलता बार-बार आने वाली बाढ़ का एक और प्रमुख कारण है।विरोध के बावजूद, डीवीसी ने शुक्रवार को पानी छोड़ना जारी रखा - आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, पंचेत से 8,000 क्यूसेक और मैथन से 4,000 क्यूसेक। डीवीसी ने आरोपों से किया इनकार, बातचीत के सबूत दिखाएमंत्री के आरोपों पर तीखी प्रतिक्रिया देते हुए, डीवीसी पंचेत के परियोजना प्रमुख (एचओपी) अभय श्रीवास्तव ने किसी भी गड़बड़ी से इनकार किया।उन्होंने संवाददाताओं से कहा कि पानी छोड़ने का काम केंद्रीय जल आयोग (सीडब्ल्यूसी) के नियंत्रण में आता है और पश्चिम बंगाल तथा झारखंड दोनों सरकारों के प्रतिनिधि एक संयुक्त बाढ़ नियंत्रण समूह का हिस्सा हैं।हर बार जब पानी छोड़ा जाता है, तो हम सभी सदस्यों को आधिकारिक ईमेल और व्हाट्सएप संदेशों के माध्यम से सूचित करते हैं। मैंने वे संवाद मीडिया को दिखाए हैं। श्रीवास्तव ने कहा, टीएमसी नेताओं के दावे राजनीति से प्रेरित हैं।उन्होंने आगे कहा कि डीवीसी जलविद्युत उत्पादन के लिए प्रतिदिन लगभग 6,000 क्यूसेक पानी छोड़ता है, और जब पानी 32,000 क्यूसेक से अधिक हो जाता है, तभी राज्य को औपचारिक रूप से अग्रिम सूचना दी जाती है।पश्चिम बंगाल के प्रतिनिधि मनीष कुमार जैन को ऐसे सभी संचारों की पूरी जानकारी है।

भाजपा ने टीएमसी के बयान का खंडन किया

बंगाल सरकार और डीवीसी के बीच टकराव

इस बीच, भाजपा विधायक अग्निमित्र पॉल ने सत्तारूढ़ टीएमसी पर जनता को गुमराह करने का आरोप लगाया।पानी छोड़ने के लिए एक संयुक्त समिति है जिसमें बंगाल और झारखंड दोनों के प्रतिनिधि शामिल हैं। डीवीसी उन्हें हमेशा सूचित करता है, लेकिन बंगाल के अधिकारी समय पर जवाब देने में विफल रहते हैं, उन्होंने कहा। उन्होंने आगे कहा कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को बार-बार आने वाली बाढ़ और अनियंत्रित रेत खनन की ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए, जिससे स्थिति और बिगड़ती जा रही है।शुक्रवार के विरोध प्रदर्शन के दौरान डीवीसी पंचेत कार्यालय परिसर के आसपास भारी तनाव देखा गया, जहाँ व्यवस्था बनाए रखने के लिए भारी पुलिस बल तैनात किया गया था। दोनों पक्षों - डीवीसी अधिकारियों और तृणमूल कांग्रेस नेताओं - ने लापरवाही और राजनीतिक अवसरवाद के आरोप लगाए।यह जारी विरोध प्रदर्शन बंगाल सरकार और डीवीसी के बीच टकराव को और बढ़ा रहा है, क्योंकि मैथन और पंचेत, दोनों बाँध मानसून के जल निकासी प्रबंधन विवादों के बीच भारी मात्रा में पानी छोड़ रहे हैं।

एक बार फिर शेख दिलदार के उपर बड़ी जिम्मेवारी

अगामी जामुड़िया विधानसभा चुनाव में बांधना होगा जीत का सेहरा

अपने ही लोगों से होगी लड़ाई, सभी को कैसे खुश कर पाएंगे दिलदार ? : सुत्र

जामुड़िया : जामुड़िया विधानसभा अंतर्गत जब-जब चुनाव आता है तब तब शेख दिलदार के नेतृत्व में तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ता अपनी मेहनत और लगन से प्रत्येक चुनाव में बढ़त दिलाकर प्रत्याशी को भारी मतों से जीत दिलाते हैं जामुड़िया विधानसभा में 44 साल से लाल दुर्ग यानि सीपीआईएम का कब्जा रहा है वर्ष 2021 में जामुड़िया विधानसभा से तृणमूल कांग्रेस पार्टी के तरफ से उम्मीदवार के तौर पर हरे राम सिंह को उतारा गया था उस समय शेख दिलदार के नेतृत्व में उनके सारे कार्यकर्ता ने पूरी मेहनत और लगन के साथ कार्य करते हुए हरेराम सिंह को जामुड़िया से विधायक बनाकर विधानसभा भेजा गया था उस 2021 विधानसभा चुनाव में हरेराम सिंह के साथ कंधा से कंधा मिलाकर शेख दिलदार और उनके जितने भी कार्यकर्ता थे सभी ने मिलकर चुनाव में जबरदस्त प्रचार और रैलिया की थी जिसका फायदा हरे राम सिंह को मिला था, उस समय 2021 में कोरना काल चल रहा था अपने शरीर का ध्यान न रखते हुए शेख दिलदार ने सुबह 10:00 बजे से लेकर रात करीब 2:00 बजे तक प्रत्येक दिन हरेराम सिंह के लिए चुनाव प्रचार किया था एवंम लगातार 1 महीने तक शेख दिलदार ने जामुड़िया के प्रत्येक वार्ड के सभी बूथों पर चुरालिया के प्रत्येक अंचल मे पार्टी के कार्यकताओं के साथ जाकर बड़ी छोटी बैठक की बड़ी-बड़ी रैलियां की प्रत्येक कार्यकर्ता के अंदर जोश भरा गया था तब जाकर जामुड़िया से हरेराम सिंह विधायक के तौर पर चुने गए थे, विधानसभा चुनाव 2021 से पहले तृणमूल कांग्रेस के कई नेता और कार्यकर्ता मन मुटाओ कर घर बैठ गए थे उस समय शेख दिलदार ने घर बैठे हुए नेता और कार्यकताओं को फिर से एक बार पार्टी में लाकर कर खड़ा किया एवंम उनसे कहा गया की हम सब पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के सैनिक है एवं हम उनके लिए कार्य करते हैं शेख दिलदार की सबसे बड़ी खूबी यह रही है की उन्होंने सबसे ज्यादा जोर युवाओं के ऊपर डाला था उभरते हुए युवाओं को पार्टी के अंदर लाकर तृणमूल कांग्रेस पार्टी को जामुड़िया विधानसभा मे और भी शक्तिशाली बना दिया था, जामुड़िया विधानसभा के अंदर जितनी भी बड़ी रैलियां शेख दिलदार के नेतृत्व में हुई थी उस रैली मे लाखों की संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहते थे 2021 विधानसभा चुनाव में रोजाना हजारों की संख्या में कार्यकर्ता उनके कार्यालय में सुबह से ही भीड़ लगाकर बैठे रहते थे शेख दिलदार के आते ही कार्यालय में जितने भी लोग बैठे रहते थे उनके साथ कंधा से कंधा मिलाकर जामुड़िया के प्रत्येक वार्ड में घूम घूम कर हरेराम सिंह के लिए प्रचार कर रहे थे आखिरकार शेख दिलदार की मेहनत रंग लाई और जामुड़िया विधानसभा क्षेत्र से हरेराम सिंह को जीत प्राप्त हुई और वें जामुड़िया विधानसभा के विधायक बन गए` इसी तरह 2024 के लोकसभा चुनाव में भी उनकी छवि एक बार फिर से नजर आई 2024 लोकसभा के चुनाव में तृणमूल कांग्रेस पार्टी ने शत्रुघ्न सिन्हा को आसनसोल सीट से उतार गया, उस समय भी शेख दिलदार की भूमिका बखूबी नजर आई थी 2024 लोकसभा चुनाव में शत्रुघ्न सिन्हा के लिए प्रत्येक वार्डों में और प्रत्येक पंचायत के इलाकों में जाकर सभा को संबोधित करते थे एवं शत्रुघ्न सिन्हा के लिए वोट मांगते थे और 2024 लोकसभा चुनाव के बाद शत्रुघ्न सिन्हा ने भारी मतों से जीत प्राप्त की थी उस समय भी शत्रुघ्न सिंह को जामुड़िया से भारी मतों से बढ़त दिलाई थी अब फिर एक बार 2026 में विधानसभा का चुनाव है अब देखना यह है कि 2026 का विधानसभा चुनाव में शेख दिलदार की क्या भूमिका रहती है क्योंकि शेख दिलदार को कई महीने तक राजनीति से दूर देखा गया ना कभी उन्हें रैली में देखा गया और ना ही कभी कोई सभा को संबोधित करते हुए देखा गया` फिर एक बार साधन राय को बड़ा पद मिलने के बाद और जामुड़िया बोरो एक के चेयरमैन शेख शानदार को जामुड़िया ब्लॉक एक का उपाध्यक्ष पद मिलने के बाद शेख दिलदार के कार्यालय में हजारों की संख्या में भीड़ देखने को मिली देखकर ऐसा लग रहा था कि शेख दिलदार का जादू एक बार फिर 2026 के विधानसभा के चुनाव में चलेगा ।

2021 विधानसभा चुनाव में दिखाई थी अपनी राजनीतिक ताकत, विरोधियों को किया था शुन्य

मोहन सरकार की भावांतर योजना से लौटी सोयाबीन किसानों की मुस्कान

योजना से राज्य के 50 लाख हेक्टेयर सोयाबीन क्षेत्र और 25 लाख से अधिक छोटे-मझोले किसानों को बड़ी राहत मिलेगी

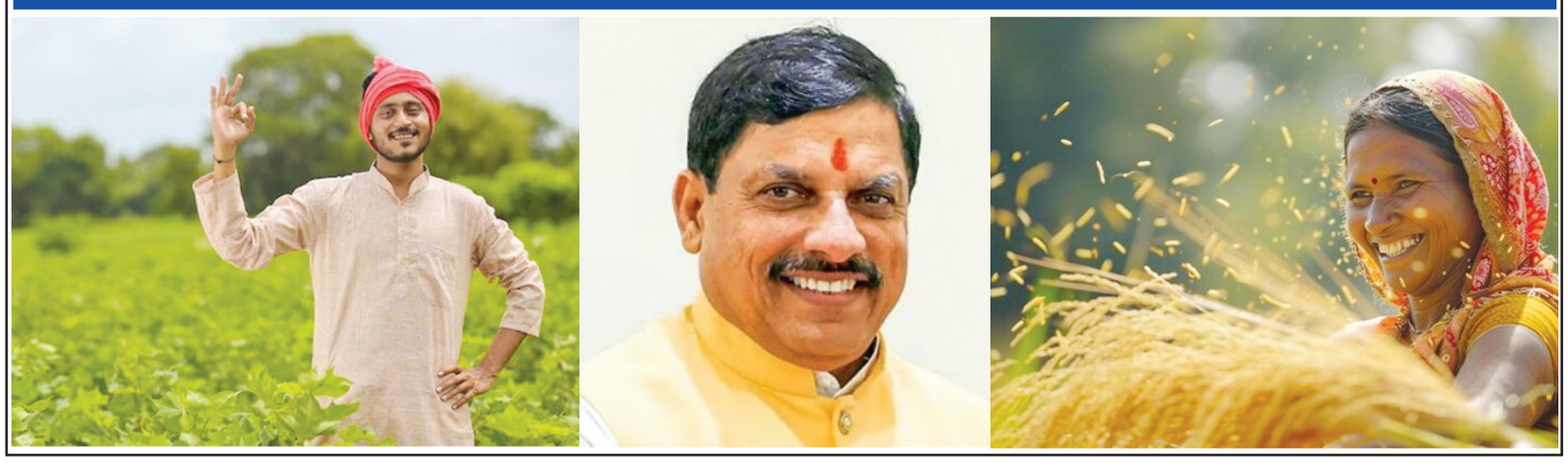

हर्षवर्धन पान्डे

सोयाबीन मध्यप्रदेश के किसानों की आजीविका का प्रमुख आधार है। यहां बाजार मूल्यों की अस्थिरता किसानों के लिए हमेशा एक बड़ी चुनौती रही है। ऐसे में मध्यप्रदेश की डॉ. मोहन सरकार ने किसानों को भावांतर योजना के माध्यम से बड़ी राहत प्रदान की है जो न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) और बाजार मूल्य के अंतर की भरपाई करेगी। यह योजना किसानों को बाजार जोखिम से बचाने का एक प्रभावी उपकरण साबित होगी। हाल ही में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोयाबीन उत्पादकों के लिए इस योजना को पुनः लागू करने की घोषणा की है जो मध्यप्रदेश के सोयाबीन उत्पादक किसानों के लिए एक बड़ी राहत का संकेत है।

2025 में सोयाबीन की कीमतों में गिरावट के बीच मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भावंतर योजना की घोषणा करके किसानों के हित में एक बड़ा मास्टर स्ट्रोक खेला है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की इस बड़ी घोषणा से राज्य के 50 लाख हेक्टेयर सोयाबीन क्षेत्र और 25 लाख से अधिक छोटे-मझोले किसानों को बड़ी राहत मिलेगी। प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान के अंतर्गत अधिसूचित तिलहनी फसल के लिए भावांतर योजना वर्ष 2018-19 से लागू की गई है। भारत सरकार ने घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) तथा राज्य के मंडी के मॉडल भाव/विक्रय मूल्य अंतर की राशि कृषकों को दिलवाने का प्रावधान किया है। किसान पहले की तरह अपनी उपज मंडियों में बेचेंगे। एमएसपी और मंडी का मॉडल भाव/विक्रय मूल्य के बीच के अंतर की राशि का किसान को डीबीटी से भुगतान किया जायेगा। इसके लिए किसान द्वारा ई-पोर्टल पर पंजीयन अनिवार्य होगा। उदाहरण के लिए किसान का उत्पादन मॉडल भाव 4600 रूपए पर हुआ है तो समर्थन मूल्य 5328 में से शेष अर्थात भावांतर राशि 628 रूपए प्रति क्विंटल राज्य सरकार द्वारा प्रदान किए जाएंगे।

किसान को समर्थन मूल्य बराबर ही राशि प्राप्त होगी। यदि किसान की उपज का विक्रय मूल्य एमएसपी से कम है परंतु राज्य के औसत मॉडल प्राइज के समतुल्य है ऐसी स्थिति में भी किसान को एमएसपी और बिक्री मूल्य के भावांतर की राशि प्रदान की जाएगी। तीसरी स्थिति में कृषि उपज का विक्रय मूल्य राज्य के औसत मॉडल प्राइस से कम होने की दिशा में किसान को एमएसपी और घोषित औसत मॉडल प्राइस के भावांतर की राशि प्रदान की जाएगी। प्रत्येक स्थिति में किसान का लाभ सुनिश्चित किया जाएगा। मध्यप्रदेश में सोयाबीन किसानों के लिए भावांतर योजना के लिए पंजीकरण शुरू हो चुका है। मोहन सरकार के इस निर्णय से सोयाबीन उत्पादक के किसानों के चेहरे खिले नजर आ रहे हैं। योजना के तहत न्यूनतम समर्थन मूल्य और बाजार भाव के बीच के अंतर की राशि सरकार देगी। पंजीयन के बाद भावांतर योजना में सोयाबीन का विक्रय किया जा सकेगा। राशि फसल विक्रय के 15 दिवस के अंतर किसानों के खाते में डीबीटी के माध्यम से दी जाएगी। भावांतर योजना के लिए निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार मध्यप्रदेश में ई-उपार्जन पोर्टल पर पंजीयन का कार्य 3 अक्टूबर से शुरू होकर 17 अक्टूबर 2025 तक चलेगा। पंजीयन के बाद भावांतर योजना में सोयाबीन का विक्रय 24 अक्टूबर से 15 जनवरी तक किया जा सकेगा। पंजीकृत कृषक और उनके रकबे के सत्यापन की प्रक्रिया राजस्व विभाग के माध्यम से पूर्ण होगी।

किसानों के भावांतर की राशि फसल विक्रय के 15 दिवस के भीतर उनके बैंक खाते में सीधे हस्तांतरित की जाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि किसान मंडियों में पहले की तरह ही सोयाबीन का विक्रय करेंगे। यदि फसल एमएसपी से कम भाव पर बिकती है तो सरकार अंतर की राशि सीधे किसानों के खातों में जमा करेगी। इसके लिए किसानों को योजना में पंजीयन कराना अनिवार्य होगा। यदि मंडी में सोयाबीन का भाव एमएसपी से कम लेकिन राज्य सरकार के घोषित औसत मॉडल भाव से अधिक है तो एमएसपी और वास्तविक बिक्री मूल्य का अंतर सरकार देगी। यदि मंडी भाव औसत मॉडल भाव से भी कम है तो एमएसपी और मॉडल भाव का अंतर किसानों को मिलेगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कलेक्टरों को निर्देश देते हुए कहा है कि योजना को पारदर्शी ढंग से लागू किया जाए और किसानों तक पूरी जानकारी पहुंचाई जाए। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव सरकार ने किसानों की समग्र कल्याण के लिए कई कदम उठाए हैं।

हाल ही में दशहरा के अवसर पर 8.84 लाख किसानों के खातों में 653.34 करोड़ रुपये की राहत राशि ट्रांसफर की गई जो अतिवृष्टि, बाढ़, कीट व्याधि और सोयाबीन में पीला मोजेक रोग से प्रभावित फसलों के लिए थी। इस बार प्रदेश के 13 जिलों के 4.94 लाख किसानों को पहली बार इस रोग के लिए विशेष सहायता मिली। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि राज्य सरकार किसानों की हितैषी सरकार है। किसानों के हित के लिए सरकार के पास राशि की कोई कमी नहीं है। किसान-कल्याण मोहन सरकार की पहली प्राथमिकता है। किसानों के लिए राज्य सरकार अनेक योजनाएं संचालित कर रही है। जिस तरह धान और गेहूं पर किसानों को उनके परिश्रम की कीमत दिलवाने का कार्य किया गया उसी तरह प्रदेश के सोयाबीन उत्पादक किसानों को भी लाभ सरकार द्वारा दिलाया जा रहा है। मध्यप्रदेश सरकार किसानों को उनके उत्पादन का मूल्य दिलवाने के लिए पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध नजर आती है।

मध्यप्रदेश की भावांतर योजना किसानों को बाजार की अनिश्चितताओं से बचाने का मोहन सरकार का एक बहुत ही साहसिक प्रयास है। इस योजना के माध्यम से सोयाबीन पर केंद्रित लाखों किसानों को एक तरफ जहाँ बड़ी आर्थिक सुरक्षा मिलेगी वहीं इससे राज्य की कृषि अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी। सोयाबीन उत्पादक किसानों को उनकी उपज का वाजिब दाम मिले इसके लिए भावांतर योजना के प्रति किसानों में उत्साह देखा जा रहा है। किसानों को अब किसी प्रकार का कोई नुकसान सरकार द्वारा नहीं होने दिया जायेगा। केंद्र सरकार द्वारा सोयाबीन का न्यूनतम समर्थन मूल्य रु 5328 प्रति क्विंटल तय किया गया है लेकिन बाजार में कई बार किसानों को इससे कम कीमत पर अपनी फसल बेचनी पड़ रही थी। ऐसे में मोहन सरकार की यह भावांतर योजना सोयाबीन किसानों को निश्चित तौर पर बड़ी राहत देने का काम करेगी।

अजब-गजब

2026 के लिए बाबा वेंगा की डरावनी भविष्यवाणियां

होगा तीसरा महायुद्ध, एलियन का हमला और एआई का राज

निज संवाददाता : बाबा वेंगा की भविष्यवाणियां 2026 को लेकर फिर चर्चा में हैं। कहा जा रहा है कि आने वाला साल मानव सभ्यता के लिए निर्णायक मोड़ हो सकता है, जब युद्ध, एआई और आसमान से आने वाले अनजान प्राणी सब कुछ बदल देंगे। लेकिन क्या यह सब सिर्फ मिथक हैं या इतिहास खुद को दोहराने जा रहा है?बाबा वेंगा की भविष्यवाणियों के अनुसार, 2026 में विश्व में ऐसा भू-राजनीतिक और प्राकृतिक संकट जन्म ले सकता है जो अब तक की सभ्यता को हिला देगा। उनकी कथित भविष्यवाणियों में कहा गया है कि पूर्वी क्षेत्र से एक ऐसा युद्ध शुरू होगा जो धीरे-धीरे पूरे पश्चिम तक फैल जाएगा। कई जानकार इस दावे को तीसरा विश्व युद्ध बता रहे हैं।बाबा वेंगा की भविष्यवाणी के

अनुसार एआई 2026 में इतनी ताकतवर हो जाएगी कि वह मानव जीवन के फैसलों में हावी हो जाएगी। यह वही समय होगा जब एआई मानव नौकरियों और शासन-प्रणाली पर सीधा प्रभाव डालना शुरू करेगा यानी मशीनों का शासन युग का आरंभ होगा। कई यूरोपीय मीडिया स्रोतों के अनुसार, बाबा वेंगा ने 2026 में भयंकर प्राकृतिक आपदाओं की चेतावनी दी थी जैसे विशाल भूकंप, ज्वालामुखी विस्फोट और मौसमीय उलटफेर, जिससे पृथ्वी की करीब 7-8 प्रतिशत जमीन प्रभावित हो सकती है। यानी एक ऐसा वर्ष जब प्रकृति खुद इंसान से हिसाब मांगेगी।बाबा वेंगा की 2026 को लेकर एक और रहस्यमय भविष्यवाणी है। इनके अनुसार मानव सभ्यता का पहली बार बाहरी जीवन (एलियन लाइफ) से संपर्क होगा। नवंबर 2026 में एक बड़ा अंतरिक्ष यान पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश कर सकता है। यानी हम अकेले नहीं हैं यह सत्य दुनिया के सामने आ सकता है।

पवन-ज्योति विवाद से भाजपा की बिहार चुनावी रणनीति पर बड़ा संकट

अब यह विवाद सोशल मीडिया से लेकर राजनीतिक गलियारों तक चर्चा का विषय बन चुका है। जिस प्रकार से यह मुद्दा महिलाओं की अस्मिता, सम्मान और संवेदना से जुड़ता दिख रहा है, उससे बिहार की राजनीति में हलचल मच गई है। भाजपा के लिए यह स्थिति असहज बनती जा रही है, खासकर तब जब पार्टी पवन सिंह को दक्षिण बिहार में अपना लोकप्रिय चेहरा बनाकर 2025 के चुनावी मैदान में उतारने की तैयारी में है।

संजय सक्सेना

भोजपुरी सिनेमा के पावर स्टार और हाल ही में भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुए अभिनेता पवन सिंह एक बार फिर अपने निजी जीवन को लेकर सुर्खियों में हैं। लेकिन इस बार मामला सिर्फ पर्सनल नहीं रहा, इसका सीधा असर उनकी राजनीतिक छवि और भाजपा की आगामी बिहार विधानसभा चुनाव की रणनीति पर पड़ सकता है। पवन सिंह की दूसरी पत्नी ज्योति सिंह के साथ लंबे समय से तलाक का मामला अदालत में चल रहा है, लेकिन हाल ही में लखनऊ में हुए एक घटनाक्रम ने इस विवाद को नया मोड़ दे दिया है। अब यह विवाद सोशल मीडिया से लेकर राजनीतिक गलियारों तक चर्चा का विषय बन चुका है। जिस प्रकार से यह मुद्दा महिलाओं की अस्मिता, सम्मान और संवेदना से जुड़ता दिख रहा है, उससे बिहार की राजनीति में हलचल मच गई है। भाजपा के लिए यह स्थिति असहज बनती जा रही है, खासकर तब जब पार्टी पवन सिंह को दक्षिण बिहार में अपना लोकप्रिय चेहरा बनाकर 2025 के चुनावी मैदान में उतारने की तैयारी में है।

लखनऊ में हुए ताजा घटनाक्रम की बात करें तो ज्योति सिंह सोशल मीडिया पर पहले ही यह घोषणा कर चुकी थीं कि वह अपने पति से मिलने लखनऊ जा रही हैं। उन्होंने लिखा था कि उन्हें उम्मीद है पवन सिंह उनसे जरूर मिलेंगे। लेकिन जब वह उनके घर पहुंचीं, तो वहां पुलिस पहले से मौजूद थी। न तो उन्हें घर में घुसने दिया गया और न ही पवन सिंह सामने आए। इस पूरी घटना का वीडियो खुद ज्योति सिंह ने रिकॉर्ड किया और उसे लाइव किया। वीडियो में ज्योति सिंह फूट-फूट कर रोती नजर आती हैं। वह कहती हैं कि अगर उन्हें पुलिस स्टेशन जाना पड़ा तो वह इसी घर में जान दे देंगी। यह बयान और उनका दुखड़ा सुनकर सोशल मीडिया पर लोग भावुक हो गए। वीडियो वायरल हुआ और ज्योति सिंह के समर्थन में हजारों कमेंट आने लगे।यह विवाद यहीं तक सीमित नहीं रहा। भोजपुरी सिनेमा के एक और बड़े नाम, खेसारी लाल यादव ने भी इस मुद्दे पर खुलकर अपनी राय रखी। उन्होंने कहा कि अगर भाभी ने कोई बड़ी गलती नहीं की है तो पवन सिंह को उन्हें माफ कर देना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि वह भले ही उनकी बहन नहीं हैं, लेकिन एक बेटी हैं, और अगर उनकी अपनी बेटी के साथ ऐसा होता तो वह चुप नहीं बैठते। खेसारी लाल का यह बयान सिर्फ व्यक्तिगत संवेदना नहीं, बल्कि इसमें सामाजिक और राजनीतिक संकेत भी छिपे हैं। पवन सिंह और खेसारी लाल के बीच पहले से प्रतिस्पर्धा रही है, लेकिन अब यह प्रतिस्पर्धा केवल फिल्मी पर्दे तक सीमित नहीं रही, बल्कि सियासी रंग लेती नजर आ रही है। गौरतलब है कि ज्योति सिंह और पवन सिंह के बीच तलाक का मामला बिहार के आरा की फैमिली कोर्ट में चल रहा है। पवन सिंह की ओर से बयान दर्ज हो चुका है, वहीं ज्योति सिंह की गवाही अभी होनी बाकी है। अगली सुनवाई की तारीख 8 अक्टूबर तय की गई है।

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, ज्योति सिंह ने इस तलाक के बदले 5 करोड़ रुपये और एक घर की मांग की है। जबकि पवन सिंह बच्चों की पढ़ाई और खर्च उठाने को तैयार हैं, लेकिन दोनों के बीच सहमति नहीं बन पा रही है। इस बीच ज्योति सिंह ने यह भी कहा है कि अगर उन्हें इंसाफ नहीं मिला, तो वह राजनीति में उतरकर अपनी लड़ाई लड़ेंगी। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि वह आगामी चुनावों में निर्दलीय या किसी पार्टी के टिकट पर मैदान में उतर सकती हैं। यह बयान और परिस्थितियां भाजपा के लिए नई चिंता बन गई हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी 2019 के लोकसभा चुनाव में महिला वोटर्स को भाजपा की साइलेंट स्ट्रेंथ बता चुके हैं। ऐसे में अगर यह विवाद और गहराया, और महिलाओं में ज्योति सिंह के प्रति सहानुभूति की लहर चल पड़ी, तो भाजपा को इसकी कीमत चुकानी पड़ सकती है। इस पूरे मामले में भाजपा की स्थिति बेहद नाजुक बन गई है। पार्टी के पास अब दो ही रास्ते हैं या तो वह पवन सिंह को सार्वजनिक रूप से विवाद सुलझाने को कहे और डैमेज कंट्रोल करे, या फिर उन्हें बैकफुट पर डालकर कोई दूसरा चेहरा सामने लाए। राजनीतिक जानकार मानते हैं कि यदि भाजपा ने इस मुद्दे को हल्के में लिया, तो उसे आने वाले बिहार विधानसभा चुनाव में नुकसान उठाना पड़ सकता है। ज्योति सिंह का यह कहना कि ''यह सिर्फ मेरा अपमान नहीं, हर पत्नी और बहू का अपमान है'', आम महिलाओं के दिल को छूने वाला बयान है।

10,000 साल पहले चीन और दक्षिण-पूर्व एशिया में शुरू हुआ था ममी बनाने का खेल

परिजनों के प्रति प्यार जताने के लिए लोग शव को आग और धुएं में सुखाते थे

जब भी ममी का नाम आता है, हमारे दिमाग में मिस्र की तस्वीर आंखों के सामने घूमने लगती है। ताजा रिसर्च से पता चला है कि ममी बनाने का असली खेल तो 10,000 साल पहले चीन और दक्षिण-पूर्व एशिया में शुरू हुआ था। यहां लोग अपने मृतकों को बचाने के लिए उन्हें आग और धुएं से सुखाते थे। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक चीन, थाईलैंड, लाओस, फिलीपींस, मलेशिया और इंडोनेशिया में पुरानी कब्रें खोदकर देखी गईं। वहां मिले कंकाल किसी बच्चे की तरह गोल-गोल सिकुड़े हुए थे। शुरुआत में ये समझ नहीं आया कि ऐसा क्यों है, लेकिन जांच से पता चला है कि दफनाने से पहले शवों को आग और धुएं पर लंबे समय तक रखा गया। इसी प्रक्रिया से उनकी देह जल्दी गलती नहीं थी। रिसर्च में कहा गया है कि एक्स-रे और खास टेक्निक से हड्डियों की जांच की कई। नतीजा यह निकला कि हड्डियों पर हल्की गर्मी और कालिख के निशान थे, लेकिन जलने का कोई सबूत नहीं मिला। यानी ये शव धीरे-धीरे धुएं में सुखाए गए थे, जलाए नहीं गए। इसे ही वैज्ञानिकों ने 'स्मोक्ड ममी' का नाम दिया। यह तरीका सिर्फ इतिहास का हिस्सा नहीं है। इंडोनेशिया के पापुआ में दानी और पुमो समुदाय आज भी अपने पूर्वजों को ऐसे ही ममी बनाकर रखते हैं। साल 2019 में वैज्ञानिकों ने खुद देखा कि कैसे वहां शव को कसकर बांधकर आग और धुएं पर लटकाया जाता है, जब तक कि उसका रंग काला न पड़ जाए। माना जाता है कि धुएं से ममी बनाने का मकसद सिर्फ शरीर को सुरक्षित रखना नहीं था। इसके पीछे धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताएं थीं। परिवार अपने प्रियजनों को लंबे समय तक अपने पास देखना चाहता था। ये प्यार, याद और अपनापन जताने का तरीका था। वैज्ञानिकों का कहना है कि ये खोज इंसानों की शुरुआती यात्रा को भी समझने में मदद करती है। उनका मानना है कि करीब 65 हजार साल पहले जो शिकारी-जनजातियां यहां आईं, उन्हीं ने यह परंपरा शुरू की थी। बाद में खेती करने वाले लोग आए और अलग तरीके से दफनाने लगे। ये अब भी रहस्य है। शायद इंसानों ने पहले जानवरों का मांस धुएं से बचाना सीखा और फिर वही तरीका अपने मृत परिजनों पर भी आजमाया, लेकिन एक बात साफ है 10 हजार साल पहले भी इंसान अपने रिश्तों को बचाने और यादों को जिंदा रखने के लिए ऐसे प्रयोग करता था।

दुनिया की सबसे भारी सोने की ड्रेस

सऊदी अरब की अल रोमाइजन गोल्ड एंड ज्वेलरी कंपनी ने 10 किलो सोने से एक ड्रेस तैयार की है। इसकी चर्चा पूरी दुनिया में हो रही है। इसका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है। ये दुनिया की सबसे भारी सोने की ड्रेस है और इसी वजह से इसे गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में जगह दी गई है। इस ड्रेस को 'दुबई ड्रेस' का नाम दिया गया है और यह अभी शारजाह वॉच एंड ज्वेलरी एक्सपो में दिखाई गई है। इस ड्रेस को शुद्ध 21 कैरेट सोने से तैयार किया गया है और इसका वजन 10.0812 किलोग्राम है। इसकी कीमत की अगर बात करें तो यह 4.6 मिलियन एईडी (लगभग 11 करोड़ रुपये) है। दुबई ड्रेस में चार मुख्य चीजें हैं जिसमें 398 ग्राम का सोने का मुकुट, 8,810.60 ग्राम का हार, 134.1 ग्राम के ईयररिंग्स और 738.5 ग्राम का 'हियर' पीस शामिल हैं। इसमें रंगीन कीमती पत्थरों से जड़े जटिल डिजाइन और बारीक नक्काशी है, जो इसे एक कलात्मक कृति बनाती है। यह सोने और गहनों की भाषा में अमीराती सांस्कृतिक विरासत की कहानी बयां करती है। गहने की कंपनी ने कहा कि उनके डिजाइनरों ने ''दुबई ड्रेस'' के लिए असली अमीराती विरासत से प्रेरणा ली है। यह पीस इतिहास की झलक और अमीराती सभ्यता की शुद्धता को आधुनिक टच के साथ दिखाता है।मीडिया न्यूज के अनुसार अल रोमाइजन गोल्ड के रीजनल डिप्टी मैनेजर मोहसिन अल धैबानी ने बताया कि यह काम यूएई की ग्लोबल लीडरशिप हासिल करने की महत्वाकांक्षा को दर्शाता है और दुबई को सोने और गहनों के शौकीनों के लिए सबसे अच्छी जगह के रूप में दिखाता है, साथ ही यह अबुधाबी के कारीगरों की अनोखी क्रिएटिविटी को भी दिखाता है। पांच दिन तक चले वॉच एंड ज्वेलरी मिडिल ईस्ट शो के 56वें वर्जन में कई और आकर्षणों में एक सोने की साइकिल भी शामिल है, जिसकी कीमत 1.5 मिलियन एईडी बताई गई है। इस प्रदर्शनी में इटली, भारत, तुर्की, अमेरिका, रूस, यूनाइटेड किंगडम, जापान, चीन, सिंगापुर, हांगकांग और मलेशिया के 500 से अधिक स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शक, साथ ही 1,800 से अधिक डिजाइनर, निर्माता और उद्योग के पेशेवर भी शामिल हैं।

जकार्ता में भारत U-23 की जीत

सुहैल भाट के दो गोलों ने इंडोनेशिया को दी मात

निज संवाददाता : जकार्ता के रोमांच से भरे गेलोरा बुंग कार्नो मद्या स्टेडियम में 10 अक्टूबर, 2025 को खेले गए मैच में भारत की अंडर U-23 टीम ने जोश और जुझारू फुटबॉल का प्रदर्शन करते हुए इंडोनेशिया को 2-1 से हराया। यह मैच दो अलग-अलग हिस्सों की कहानी कहता है, जहां स्ट्राइकर सुहैल अहमद भाट मैच के हीरो बनकर उभरे, जिन्होंने पहले ही हाफ़ में दो गोल दागे और ब्लू कॉल्ट्स के लिए जीत सुनिश्चित की।

पहले हाफ़ में जोरदार दबदबा

शुरुआती सीटी बजते ही भारत ने ऐसी तीव्रता के साथ खेल शुरू किया जिसने घरेलू टीम इंडोनेशिया को हिलाकर रख दिया। उनकी आक्रामक प्रेसिंग ने तुरंत ही परिणाम दिखाया और महज 5वें मिनट में सुहैल भाट ने एक ढीले इंडोनेशियाई पास पर कब्जा जमाया, बॉक्स में घुसे और टॉप कॉर्नर में जोरदार शॉट लगाकर गोल कर दिया। पीछे हटने की बजाय, भारत लगातार गोल के मौकों की तलाश में रहा। वे कई बार अपनी बढ़त बढ़ाने के करीब पहुंचे विबिन मोहनन के जोरदार शॉट को गोललाइन से हटाया गया और कोरोउ सिंह थिंगुजाम ने बाद में पोस्ट को हिला दिया। यह दबाव लगातार बना रहा और 26वें मिनट में दूसरा गोल आ गया। विबिन की एक लो क्रॉस को कप्तान आयुष चेत्री ने स्मार्टली सुहैल भाट के लिए ले जाकर सेट किया। स्ट्राइकर ने अपने मार्कर को रोके रखने की ताकत दिखाई और एक बार फिर नेट के टॉप कॉर्नर में जोरदार प्रहार किया। भारत के दबदबे के बावजूद, हाफ़टाइम से ठीक पहले इंडोनेशिया को एक जीवनरेखा मिल गई। 41वें मिनट में, लेफ्ट-बैक डोनी त्रि पमुंगकस ने बॉक्स के किनारे जगह बनाई और एक शानदार कर्व्ड शॉट टॉप कॉर्नर में लगाया, जिसे डेब्यू कर रहे गोलकीपर मोहनराज भी नहीं रोक सके।

मैच की झलक

अंतिम स्कोर भारत U-23, 2-1 इंडोनेशिया

U-23 स्थान गेलोरा बुंग कार्नो मद्या स्टेडियम,

जकार्ता भारत के गोलकर्ता सुहैल अहमद भाट (5वां, 26वां मिनट)

इंडोनेशिया के गोलकर्ता डोनी त्रि पमुंगकस (41वां मिनट)

दूसरे हाफ़ की जुझारू लड़ाई

दूसरा हाफ़ एक अलग कहानी लेकर आया। इंडोनेशिया के कोच ने हाफ़टाइम पर कई बदलाव किए और मेजबान टीम नई ऊर्जा के साथ उतरी, बराबरी का गोल करने के लिए उन्होंने ज़्यादा पास पर कब्जा कर लिया। बढ़ते दबाव का सामना करते हुए, भारत की डिफेंस दूसरे हाफ़ की मुख्य विशेषता बनकर उभरी। बैकलाइन, जो पहले हाफ में पैनी नज़र आ रही थी, और भी जुझारू हो गई। राइट-बैक रिकी मीतेई जैसे खिलाड़ियों ने डिफेंस और अटैक दोनों में अहम भूमिका निभाई, जबकि हर्ष पालंदे ने अपनी फिजिकल प्रेजेंस से इंडोनेशिया के हमलों को विफल किया। भारत के पास अभी भी मैच पर मुहर लगाने के मौके थे, 57वें मिनट में इंडोनेशियाई गोलकीपर ने सुहैल भाट के हैट्रिक के मौके को ब्लॉक कर दिया। जैसे-जैसे समय बीतता गया, ब्लू कॉल्ट्स डटे रहे और इंडोनेशिया के हर हमले को विफल करते हुए एक कठिनाई से भरी और पूरी तरह से योग्य जीत हासिल की। मैदान से आवाज़ें मैच का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार प्राप्त करने के बाद, दो गोल करने वाले हीरो सुहैल भाट ने अपना प्रदर्शन टीम को समर्पित किया। भाट ने कहा-''हम सब जीत के इरादे से यहां आए थे। एएफसी (U-23 एशियन कप क्वालीफायर) में हमारा अच्छा प्रदर्शन रहा, लेकिन दुर्भाग्य से, हम क्वालीफाई नहीं कर सके। फिर भी, जोश बरकरार है। हम और जीतना चाहते हैं यह सिर्फ एक शुरुआत है। हेड कोच नौशाद मूसा ने सामूहिक प्रयास की सराहना की। मूसा ने कहा- यह एक मुश्किल मैच था, लेकिन मैं वाकई में लड़कों की सराहना करता हूं। हर कोई पूरे मैच में एक-दूसरे का समर्थन कर रहा था। आगे कहा-अभी सीखने के लिए बहुत कुछ है। लेकिन हां, मैंने पहले ही कहा था कि इंडोनेशिया के लिए यह आसान नहीं होगा।

सादगीपसंद शख़्सियत एपीजे अब्दुल कलाम की यादगार विरासत

गोविन्द अग्रवाल

भारत के पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम भारत के राष्ट्रपति ही नहीं, शीर्षस्थ वैज्ञानिक, विचारक, देशभक्त और अनुसरणीय शिक्षाविद होने के नाते सदियों याद किये जायेंगे। सादगीपसंद कलाम के जनहित में किये गये कार्य उन्हें बतौर आदर्श व्यक्तित्व पहचान कराता है। 1931 में तमिलनाडु के रामेश्वरम कस्बे के एक मध्यमवर्गीय तमिल परिवार में जन्मे उनके पिता जैनुलाब्दीन अधिक पढ़े-लिखे न होने पर भी तरक्क़ीपसंद थे। डॉ. कलाम ने अपने पिता से ईमानदारी, उदारता, भाईचारा, कृतज्ञता, समय की महत्ता व सादा जीवन जैसे गुणों को अपनाना सीखा। धार्मिक प्रवृत्ति की माता आशियम्मा से डॉ. कलाम ने ईश्वर में आस्था, जिम्मेदारियों का निर्वाह, अनुशासन, त्याग, समर्पण जैसे मानवीय गुणों को सीखा। अब्दुल कलाम अपने तीन बड़े भाई और एक बड़ी बहन के परिवार में छोटी उम्र से ही परिवार की मदद करने के लिए भी अखबार बेचा करते थे। स्कूली दिनों में पढ़ाई में सामान्य होते हुए भी नई चीजों को सीखने के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। गणित में तो उनकी विशेष रुचि थी। उनके अंतरंग मित्र जलालुद्दीन व शमसुद्दीन का डॉ. कलाम के बाल्यजीवन पर गहरा प्रभाव रहा। जिनके साथ वे आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा किया करते थे। जलालुद्दीन डॉक्टर कलाम को हमेशा वैज्ञानिक खोजों, समकालीन साहित्य और चिकित्सा विज्ञान की उपलब्धियों के बारे में बताया करते थे। जिन्होंने डॉक्टर कलाम को सीमित दायरे से बाहर निकाल कर नई दुनिया का बोध कराया। इन दोनों के अलावा वे अपनी बहन जोहरा से भी बहुत प्रेरित थे, जिन्होंने हर कठिन परिस्थितियों में अपने भाई को आगे बढ़ने में साथ दिया। अपने माता-पिता, शिक्षक एवं मित्रों के अलावा एपीजे अब्दुल कलाम प्रो. विक्रम साराभाई, प्रोफेसर सतीश धवन, प्रोफेसर ब्रह्म प्रकाश, प्रोफेसर एन जी के मेनन और डॉ. राजारमन्ना के प्रति ताज़िंदगी एहसानमंद रहे। एपीजे अब्दुल कलाम भारतरत्न एमएस सुब्बूलक्ष्मी को अपनी दूसरी मां मानते थे। जिन्हें 1950 में तंजौर में त्यागराज समारोह में सुनने के बाद कलाम साहब मानने लगे कि किसी भी राग का उद्देश्य श्रोता के मन को ईश्वर एवं उसकी समस्त सृष्टि की ओर उन्मुख रखना है। कहना न होगा कि विंग्स ऑफ फायर, इग्नाइटेड माइंड्स और इंडिया 2020 सरीखी प्रेरक पुस्तकों के रचयिता मिसाइल मैन डॉ. कलाम ने पुस्तकों की रॉयल्टी का बड़ा हिस्सा स्वयंसेवी संस्थाओं और आपदा राहत कार्यों में दान कर दिया था।

स्मृति मंधाना बनीं 5000 वनडे रन बनाने वाली पांचवीं बल्लेबाज़

सबसे तेज़ उपलब्धि हासिल करने वाली पहली महिला खिलाड़ी

शुभ्रांशु राय

स्मृति मंधाना ने रविवार को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ महिला विश्व कप मैच में एक और बड़ा कीर्तिमान अपने नाम किया, जब वह एक कैलेंडर वर्ष में 1000 वनडे रन बनाने वाली इतिहास की पहली महिला खिलाड़ी बन गईं। उप-कप्तान मंधाना को यह मील का पत्थर हासिल करने के लिए सिर्फ 18 रन की जरूरत थी, जो उन्होंने सोफी मोलिन्याक्स की गेंद पर शानदार छक्का लगाकर पूरा किया। इसी मैच में मंधाना ने महिला वनडे में 5000 रन पूरे करने वाली पाँचवीं बल्लेबाज़ बनने का गौरव भी हासिल किया, जब उन्होंने विशाखापत्तनम में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 58 रन बनाते हुए यह उपलब्धि पाई। वह यह मुकाम हासिल करने वाली सबसे कम उम्र की और सबसे तेज़ महिला बल्लेबाज़ भी बनीं। उन्होंने सिर्फ 112 पारियों में यह कारनामा किया। पिछले मैच में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ मंधाना ने महिला विश्व कप मुकाबले के दौरान एक कैलेंडर वर्ष में सबसे ज़्यादा रन बनाने का रिकॉर्ड तोड़ दिया था। 29 वर्षीय मंधाना ने आयाबोंगा खाका की गेंद पर छक्का लगाकर 1997 में बेलिंडा क्लार्क द्वारा बनाए गए 970 रनों के रिकॉर्ड को पार किया। बाएं हाथ की यह बल्लेबाज़ अपने तीसरे वनडे विश्व कप में खेल रही हैं। वह 2017 के इंग्लैंड में हुए संस्करण में उपविजेता रही भारतीय टीम का हिस्सा भी थीं। इन रिकॉर्ड्स के बावजूद, मंधाना का इस विश्व कप में प्रदर्शन बहुत अच्छा नहीं रहा है। उन्होंने श्रीलंका के खिलाफ 8, पाकिस्तान के खिलाफ 23 और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 23 रन बनाए हैं। पहले दो मैचों में भारत को जीत मिली, लेकिन शीर्ष क्रम की नाकामी दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ सामने आई, जब भारत को तीन विकेट से हार झेलनी पड़ी।

मनोरंजन

दुनिया के मंच पर भारत की बेटी ने रचा इतिहास

शैरी सिंह ने जीता मिसेज यूनिवर्स-2025 का ताज

48 साल में भारत को मिला पहला खिताब

निज संवाददाता : दुनिया के मंच पर भारत की बेटी ने एक बार फिर से इतिहास रचा है। शैरी सिंह को मिसेज यूनिवर्स 2025 का ताज पहनाया गया है और यह भारत की इस प्रतियोगिता में पहली जीत है। बता दें, इस जीत के साथ भारत ने यह प्रतियोगिता शुरू होने के 48 सालों बाद मिसेज यूनिवर्स का ताज अपने नाम किया है। यानी पहली बार भारत ने इस प्रतिष्ठित सौंदर्य प्रतियोगिता में विजय का मुकुट पहना है। 48वीं मिसेज यूनिवर्स प्रतियोगिता का ग्रैंड फिनाले फिलीपींस की राजधानी मनीला के खूबसूरत ओकाडा होटल में हुआ, जहां दुनिया भर से 120 देशों की महिलाएं हिस्सा लेने पहुंची थीं।यूएमबी पेजेंट्स से मिसेज इंडिया 2025 बनने के बाद शैरी सिंह ने मिसेज यूनिवर्स प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने अपनी सादगी, आत्मविश्वास और महिला सशक्तिकरण व मानसिक स्वास्थ्य के संदेश से सबका दिल जीत लिया। उनकी मुस्कान और आत्मविश्वास ने मंच पर मौजूद हर किसी को प्रभावित किया।जब शैरी सिंह को विजेता घोषित किया गया, तो माहौल खुशियों, गर्व और भावनाओं से भर गया। उनकी विनम्रता और मजबूत सोच ने सबको प्रेरित किया। ताज मिलने के बाद शैरी सिंह ने कहा- यह जीत सिर्फ मेरी नहीं है, बल्कि हर उस महिला की है जिसने बिना डर के बड़े सपने देखने की हिम्मत की है। मैं दुनिया को बताना चाहती हूं कि असली सुंदरता ताकत, दया और हिम्मत में छिपी होती है।

कोलकाता में 'कंटारा: चैप्टर वन' की शानदार और मार्मिक स्क्रीनिंग

निज संवाददाता : कोलकाता के एक थिएटर में कंटारा : चैप्टर वन की विशेष स्क्रीनिंग आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में फिल्म प्रेमी शामिल हुए। ऋषभ शेट्टी द्वारा निर्देशित यह फिल्म 2022 की ब्लॉकबस्टर कंटारा का प्रीक्वल है, जिसने पूरे भारत में सांस्कृतिक हलचल मचा दी थी।अपनी पूर्ववर्ती फिल्म की तरह, हाल ही में रिलीज़ हुई यह फिल्म पौराणिक कथाओं, भावनाओं और अद्भुत दृश्यों का एक सशक्त मिश्रण है, जो मूल फिल्म में दर्शाई गई रहस्यमयी दुनिया की उत्पत्ति पर प्रकाश डालती है। लुभावनी छायांकन, तीव्र पृष्ठभूमि संगीत और मार्मिक अभिनय के साथ, कंटारा: चैप्टर वन उस लोककथा और आध्यात्मिक सार को सफलतापूर्वक गहरा करती है जिसने इसकी पूर्ववर्ती फिल्म को इतना खास बनाया था। आलोचकों ने टिप्पणी की है कि फिल्म की कहानी धीमी शुरुआत करती है, लेकिन दूसरा भाग एक शक्तिशाली भावनात्मक प्रभाव और एक यादगार चरमोत्कर्ष प्रदान करता है। पहली फिल्म कंटारा आलोचनात्मक और व्यावसायिक रूप से बेहद सफल रही थी। कम बजट में बनी होने के बावजूद, इसने दुनिया भर में 400 करोड़ रुपये से ज़्यादा की कमाई की और कई राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार जीते, जिनमें सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय संपूर्ण मनोरंजन प्रदान करने वाली फ़िल्म और ऋषभ शेट्टी के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता पुरस्कार शामिल हैं। तटीय कर्नाटक की समृद्ध विरासत और उसकी गहरी सांस्कृतिक कहानी को उजागर करने के लिए फ़िल्म की सराहना की गई। कोलकाता में जनरेशन-जी दर्शकों ने इस विशेष स्क्रीनिंग का उत्साहपूर्वक स्वागत किया। दर्शकों ने अभिनय, संगीत और निर्देशन की प्रशंसा करते हुए इसे दृश्यात्मक रूप से अद्भुत और आध्यात्मिक रूप से मार्मिक अनुभव बताया। सोशल मीडिया पर सकारात्मक समीक्षाओं की भरमार रही। कई लोगों ने इसे कंटारा परंपरा का एक सशक्त विस्तार बताया।

पेज 1 का शेष.... क्यों सवालों के घेरे में

महिलाओं को लघु उद्यम चलाने में सहायता दी जाती है। इससे उनमें नेतृत्व क्षमता और प्रबंधन कौशल का विकास हुआ है। आत्मनिर्भरता और महिला उद्यमिता ऐसे प्रयासों से महिलाएं आर्थिक मजबूती के साथ आत्मसम्मान हासिल कर रही हैं। उनके अंदर प्रबंधन और निर्णय लेने की क्षमता का भी विकास हो रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दृष्टिकोण यह है कि महिलाओं का योगदान केवल आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों तक सीमित न रहकर सांस्कृतिक और नैतिक निर्माण में भी महत्त्वपूर्ण होना चाहिए। सेविका समिति की शाखाओं और शिविरों में बालिकाओं को भारतीय शास्त्र, परंपरा और इतिहास से परिचित कराया जाता है। मां भारती और नारी गरिमा की अवधारणा गीतों, नाटकों और व्याख्यानों के माध्यम से भावनात्मक रूप से जोड़ी जाती है। यह प्रशिक्षण उन्हें परिवार और समाज दोनों के प्रति जिम्मेदारी निभाने की दिशा में सजग बनाता है और उनमें नेतृत्व के साथ-साथ अनुशासन की भावना को भी प्रगाढ़ करता है। स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आधुनिक काल की प्राकृतिक आपदाओं तक, संघ प्रेरित महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। सेविका समिति की महिलाएं राहत कार्य, भोजन वितरण, आश्रय केंद्र संचालन और चिकित्सा सहयोग जैसे कार्यों में उल्लेखनीय योगदान देती रही हैं। यह उनकी सामाजिक जिम्मेदारी और सेवा भाव की जीवंत मिसाल है। उधर, आलोचक कहते हैं कि यदि महिला और पुरुष समान हैं तो महिलाओं को संघ की मुख्य संरचना में सम्मिलित क्यों नहीं किया गया। उनका मत है कि महिला नेतृत्व को पर्याप्त स्थान नहीं मिल पाता। लाखों महिलाएं इन प्रयासों से आत्मबल और आत्मसम्मान प्राप्त कर रही हैं। हालांकि आलोचनाएँ यह कहती हैं कि संघ की केन्द्रीय नीति निर्धारण इकाई में महिला नेतृत्व का अभाव अब भी दिखता है। फिर भी यह वास्तविकता भी है कि महिला शक्ति को स्वतंत्र मंच देकर उन्हें राष्ट्र निर्माण में सक्रिय किया गया है। आज गांव-गांव और शहर-शहर में संघ प्रेरित सेविकाएं समाज सेवा, संस्कार शिक्षा और महिला उत्थान का दीप जला रही हैं। उनका योगदान शिक्षा, स्वास्थ्य और संस्कृति की मजबूत नींव रख रहा है और यह सिद्ध कर रहा है कि राष्ट्र की शक्ति स्त्री और पुरुष दोनों की साझेदारी से ही संपूर्ण होती है। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर राष्ट्र के संकट काल तक, महिलाओं ने बहादुरी से भूमिका निभाई। संघ मानता है कि मातृशक्ति ही राष्ट्र की जननी है। इतिहास में क्रांति और जागरण के क्षणों में महिलाओं का योगदान सबसे अधिक रहा है। आज भी राष्ट्रीय संकट या प्राकृतिक आपदा के समय संघ व सेविका समिति की महिलाएं राहत और सेवा कार्यों में सक्रिय दिखाई देती हैं। बाढ़, भूकम्प, महामारी और दंगों के समय स्वयंसेविकाओं ने राहत शिविर चलाये, भोजन बाँटा और पीड़ित बहनों की सहायता की है। संघ पर महिला नेतृत्व को संगठनात्मक ढांचे में कम स्थान देने का आरोप लगता है। इसका कारण यह है कि संघ की मूल शाखा में केवल पुरुष सदस्य होते हैं। आलोचकों का कहना है कि यदि महिलाएं वास्तव में बराबर की भागीदार हैं, तो उन्हें इसी संरचना में सम्मिलित क्यों नहीं किया गया। संघ इस पर स्पष्ट जवाब देता है कि पुरुष और महिला दोनों की प्रकृति में अंतर है। इसलिए उनके विकास के लिये अलग-अलग मंच बनाना अधिक उपयुक्त है। राष्ट्र सेविका समिति इसी सिद्धांत पर कार्य करती है। संघ का कहना है कि समिति स्वतंत्र रही है और उसको अपने कार्यक्रम और दिशा तय करने की पूरी स्वतंत्रता दी गयी है। संघ का यह दावा भी है कि यदि महिला कार्यकर्ताओं को देखा जाए, तो वे सामाजिक उत्थान में पुरुषों से कहीं अधिक सक्रिय और प्रभावशाली ढंग से कार्य करती हैं। संघ ने महिला सशक्तिकरण के लिये क्या काम किया, इसके उदाहरण भी मौजूद हैं। संघ प्रेरित अनेक महिला कार्यकर्ताओं ने समाज में उल्लेखनीय काम किया है। आदिवासी क्षेत्रों में सैकड़ों संघ सेविकाएं शिक्षा का दीपक जलाने का कार्य कर रही हैं। शहरी झुग्गियों में बालिकाओं के लिए चलाये जा रहे संस्कार केंद्र वहां की पीढ़ी को नयी दिशा दे रहे हैं। अनेक महिलाएं ग्राम विकास योजनाओं की अगुआई कर रही हैं। संघ साफ कहता है कि राष्ट्र निर्माण में महिला और पुरुष दोनों की बराबर भागीदारी आवश्यक है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इस बात पर जोर देता रहा है कि महिला 'शक्ति' और 'संस्कार' राष्ट्र की धुरी है। यही कारण है कि संघ ने शिक्षण, स्वास्थ्य, सेवा और आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में महिलाओं के लिए हजारों योजनाएं चलाईं। हालांकि, आलोचनाएँ भी कम नहीं हैं।बहरहाल, यह सच है कि संघ की केन्द्रीय नेतृत्व संरचना में महिलाओं की औपचारिक भागीदारी नहीं है। लेकिन संघ यह मानता है कि अलग मंच बनाकर महिलाओं को राष्ट्रसेवा के लिए स्वतंत्र अवसर देना ही वास्तविक सम्मान है। अंततः यह कहना उचित होगा कि महिलाएं आज संघ प्रेरित प्रयासों से गांव-गांव और शहर-शहर में आत्मविश्वास और सम्मान के साथ खड़ी हो रही हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति और सेवा के क्षेत्र में उनका योगदान राष्ट्र निर्माण की मजबूत नींव रख रहा है।

स्वामी मोहता पब्लिशिंग हाउस के लिए, प्रकाशक, मुद्रक : अजय कुमार मोहता द्वारा अरिहंत मुद्रा, 61, सूर्यसेन स्ट्रीट, कोलकाता-700009 से मुद्रित एवं प्रकाशित। **संपादकीय कार्यालय :** 10, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सरणी, (क्लाइब रो), 5बी मंजिल, रूम नं. 9, कोलकाता-700001, **स्थानीय कार्यालय :** 28-5 कन्वेंट रोड, मौलाली, कोलकाता-700014। **संपादक : अजय कुमार मोहता,** मो. 9830045693, E-mail-gambheersamachar@gmail.com. Website. www.gambheersamachar.in (प्रकाशित रचनाओं के चयन, संपादन हेतु पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी, सभी कानूनी विवाद के लिए कोलकाता न्याय क्षेत्र)